आज़ादी का
अमृत महोत्सव

Sanginee संगिनी

Smile... Stride... Scintillate

जुलाई-सितंबर 2022

नालको NALCO

Editor-in-Chief
Sasmita Patra, President
NALCO Mahila Samiti

Editorial Board
Lina Mohapatra
Swayamprava Rath
Roshan Pandey

Co-ordinator
Kamana Singh

Assistant Co-ordinator
Aakanksha Gupta

Design concept
Bibhu Prasad
Roshan Pandey

July to September

प्रकाशक
नालको महिला समिति के
संयुक्त प्रयास से राजभाषा प्रकोष्ठ,
नेशनल एल्यूमिनियम कंपनी लिमिटेड
निगम कार्यालय, भुवनेश्वर

संपादकीय

धरती के विवध रूप हैं। हमारा देश भारत भी अपनी विचित्रता में सभी को आकर्षित करता है। यहाँ विभिन्न धर्म, भाषा और जाति के लोग निवास करते हैं। विभिन्नता में एकता ही इस भूमि का मूल मंत्र है। यही भारत का अनोखापन भी है। हमारे देश के 75वें स्वाधीनता दिवस 15 अगस्त के दौरान हर्षोल्लास से महासमारोह पूरे देश में मनाया गया। अमृत महोत्सव के इस पावन अवसर पर घर-घर तिरंगा फहराया गया। मन के एक अद्भुत आपूरित आनंद के साथ एक देश के एकात्म भाव से हम सभी उद्बोधित हुए।

भारत की महामहिम राष्ट्रपति माननीय द्रौपदी मुर्मू द्वारा कही गई बात हम सभी के लिए विशेषकर नारी जाति के लिए गर्व और मान का आधार बना।

नारी समाज का एक अभिन्न अंग है। माँ, बहन, बेटी के रूप में परिवार की जिम्मेवारियों से कहीं आगे बढ़कर **पूरे समाज एवं देश के प्रति भी अपना एक बहुआयामी कर्तव्य भी पूरा करने में नारी सक्षम है।** नारी स्वभावतः दया, क्षमा, परोपकार एवं सेवा की जीवंत मूर्ति है। आइए, भारत के 75वें स्वाधीनता दिवस के अमृत महोत्सव के विशेष अवसर पर समाज को संगठित करने के महत्त्वपूर्ण दायित्व का वहन करें। जाति, धर्म, वर्ण को भुलाकर जननी और जन्मभूमि की सेवा में अपने को समर्पित कर, स्वयं को धन्य करें।

सस्मिता पात्रा

ସମ୍ପାଦକୀୟ

ବହୁବର୍ଣ୍ଣା ଏ ପୃଥିବୀ । ଆମ ଦେଶ ଭାରତ ଭୂମି ବି ବିଚିତ୍ରତାରେ ସମସ୍ତଙ୍କୁ ଆକର୍ଷିତ କରେ। ଏଠାରେ ବିଭିନ୍ନ ଧର୍ମ, ଭାଷା, ଜାତିର ଲୋକେ ବାସ କରନ୍ତି। ବିବିଧତା ମଧ୍ୟରେ ଏକତା ହିଁ ଏ ମାଟିର ମୂଳ ମନ୍ତ୍ର। ଏହାହିଁ ଭାରତର ଐଶ୍ବର୍ଯ୍ୟ। ଆମ ଦେଶରେ ୭୫ ତମ ସ୍ୱାଧୀନତା ପୂର୍ତ୍ତି ମହୋତ୍ସବ ଅଗଷ୍ଟ ୧୫ ତାରିଖରେ ମହା ସମାରୋହରେ ପାଳିତ ହେଲା। ଅମୃତ ମହୋତ୍ସବରେ ଘରେ ଘରେ ତ୍ରିରଙ୍ଗା ଉତ୍ତୋଳନ କରାଗଲା। ମନ ଭିତରେ ଏକ ଅଦ୍ଭୂତ, ଅପରିସୀମ ଆନନ୍ଦ, ଏକ ଦେଶାତ୍ମବୋଧ ଭାବନାରେ ଆମେ ଉଦ୍‌ବୋଧିତ ହେଲୁ। ଭାରତର ମହାମହିମ ରାଷ୍ଟ୍ରପତି ସମ୍ମାନନୀୟା ଦ୍ରୌପଦୀ ମୁର୍ମୁଙ୍କର ଦେଇଥିବା ବାର୍ତ୍ତା ହିଁ ଆମ ସମସ୍ତଙ୍କ ପାଇଁ ବିଶେଷ କରି ନାରୀ ଜାତି ପାଇଁ ଗର୍ବ ଆଉ ଗୌରବ ଆଣି ଦେଇଛି।

ନାରୀ ସମାଜର ଏକ ଅଭିନ୍ନ ଅଙ୍ଗ। ଜାୟା, ଜନନୀ, ଭଗିନୀ ଭାବରେ କେବଳ ସେ ପରିବାରର ମୁଖ୍ୟ ନୁହେଁ, ସମଗ୍ର ସମାଜ ତଥା ଦେଶ ପାଇଁ ତା'ର ବହୁବିଧ କର୍ତ୍ତବ୍ୟ ସମ୍ପାଦନ କରିବାରେ ସେ ସିଦ୍ଧହସ୍ତା। ନାରୀଟିଏ ସ୍ୱାଭାବିକ ଭାବରେ ଦୟା, କ୍ଷମା, ପରୋପକାର ଓ ସେବାର ମୂର୍ତ୍ତିମତୀ ଦେବୀ। ଆସନ୍ତୁ, ଭାରତବର୍ଷର ୭୫ ତମ ସ୍ୱାଧୀନତା ଲାଭର ଅମୃତ ମହୋତ୍ସବ ଲଗ୍ନରେ ଆମେ ସମାଜକୁ ଏକାଠି କରିବାର ଗୁରୁ ଦାୟିତ୍ୱ ବହନ କରିବା। ଜାତି, ଧର୍ମ, ବର୍ଣ୍ଣ ନିର୍ବିଶେଷରେ ମାଟି ମାଆର ସେବାରେ ନିଜକୁ ନିୟୋଜିତ କରି ନିଜକୁ ଧନ୍ୟ ମଣିବା।

ସୁସ୍ମିତା ପାତ୍ର

शिक्षक दिवस

शिक्षक दिवस अर्थात गुरु दिवस। हर साल 5 सितम्बर, स्कूलों में शिक्षकों के सम्मान में मनाया जाता है। शिक्षक का अर्थ जो विद्यार्थी को अच्छा शिक्षण देते हैं, जीवन में अच्छे बुरे की ज्ञान देते हैं, उज्ज्वल भविष्य, मानवता और अच्छे व्यवहार का ज्ञान देते हैं। शिक्षक का सबसे पहला कर्तव्य होता है कि वह अपने छात्रों को एक नेक इंसान बनाए, एक अच्छा नागरिक बनाए, चाहे वह किसी धर्म का हो, या किसी जाति का। शिक्षक छात्रों का भविष्य बनाता है, गलत और सही मार्ग का चयन करना सिखाता है। शिक्षक को समाज का शिल्पकार माना जाता है क्योंकि उनका दायित्व होता है कि वे अपने शिष्य को एक अच्छे साँचे में डालें। इसीलिए कहा जाता है कि शिक्षक- शिखर तक पहुंचाने वाला, क्षमा करने की शक्ति रखने वाला, कमजोरियों को दूर करने वाला महान व्यक्ति होता है।

भारतीय संस्कृति में गुरु का पद सबसे ऊंचा और सम्मानित होता है और गुरु का स्थान भगवान से भी ऊपर है। गुरु को कहीं ब्रह्मा विष्णु महेश तो कहीं गोविंद कहा गया है।

प्रार्थना

गुरु ब्रह्मा गुरु विष्णु, गुरुर्देवो महेश्वरा,
गुरु साक्षात परब्रह्म, तस्मै श्री गुरुवे नमः।

गुरुओं मे पांच श्रेणियाँ होती -

1. शिक्षक- जो स्कूलों मे शिक्षा देते हैं।
2. आचार्य -आचरण से शिक्षा देते हैं ।
3. कुलगुरु- जो संस्कार का ज्ञान देते हैं
4. दीक्षागुरु -जो गुरु दीक्षा का मंत्र देते हैं।
5. आद्यात्मिक गुरु -जो आत्मज्ञान करा सके।

आध्यात्मिक गुरुओं के सम्मान में गुरु पूर्णिमा मनाया जाता है और शिक्षकों के सम्मान में शिक्षक दिवस मनाया जाता है। इस पवित्र दिन की शुरुआत 5 सितम्बर, 1962 में हुई। डॉ सर्वपल्ली राधाकृष्णन, भारत के पहले उप-राष्ट्रपति और दूसरे राष्ट्रपति थे जो इन पदों पर आसीन होने से पहले एक शिक्षक भी थे। उनका जन्म 5 सितम्बर 1888 में हुआ था। उनके आग्रह पर शिक्षकों के सम्मान में उनका जन्मदिन शिक्षक दिवस के रूप में मनाया जाता है। शिक्षक दिवस एक बहुत ही महत्वपूर्ण और पवित्र दिन है। शिक्षक और विद्यार्थी के बीच के रिश्तों की महत्ता दर्शाने के लिए शिक्षक दिवस मनाया जाता है। हर एक नागरिक के जीवन मे शिक्षक का खास महत्व होता है, इसीलिए कहा जाता है कि उनके बिना हम कुछ नहीं हैं।

सर्वप्रथम हमारा शिक्षण तो हमारे घर से शुरू होता है जहाँ हमारे माता पिता ही हमारे शिक्षक होते हैं। शिक्षक विद्यार्थियो के जीवन के वास्तविक कुम्हार होते हैं जो न सिर्फ हमारे जीवन को आकार देते हैं बल्कि हमें इस काबिल बनाते हैं कि हम पूरी दुनिया में अंधकार होने के बाद भी प्रकाश की तरह जलते रहें। इस वजह से हमारा राष्ट्र ढ़ेर सारे प्रकाश के साथ प्रबुद्ध हो सकता है इसीलिए, देश में सभी शिक्षकों को सम्मान दिया जाता है। अपने शिक्षकों के महान कार्यों के बराबर हम उन्हें कुछ भी नहीं लौटा सकते हालाँकि, हम उन्हें सम्मान और धन्यवाद दे सकते हैं। हमें पूरे दिल से ये प्रतीज्ञा करनी चाहिए कि हम अपने शिक्षक का सम्मान करें क्योंकि बिना शिक्षक के इस दुनिया में हम सभी अधूरे हैं। हमारे जीवन में अपने शिक्षकों की अहमियत और जरुरत को हमें हमेशा महसूस करना चाहिए और उनके कार्यों को सम्मान देने के लिए हमें हर वर्ष शिक्षक दिवस मनाना चाहिए। हमारे जीवन में माता-पिता से ज्यादा शिक्षक की भूमिका होती है क्योंकि वे हमें सफलता की ओर मोड़ते हैं। शिक्षक अपने जीवन में खुश और सफल तभी होते हैं जब उनका विद्यार्थी अपने कार्यों से जग में नाम कमाता है। हमें अपने जीवन में

शिक्षक के द्वारा पढ़ाए गये सभी पाठ का अनुसरण करना चाहिए॥

हमारे शिक्षक हमें शैक्षणिक दृष्टी से तो बेहतर बनाते ही हैं साथ ही हमारे ज्ञान, विश्वास स्तर को बढ़ाकर नैतिक रुप से भी हमें सुदृढ़ बनाते है। जीवन में अच्छा करने के लिए वह हमें हर असंभव कार्य को संभव करने की प्रेरणा देते हैं। अपने जीवन में शिक्षकों के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हुए विद्यार्थियों के द्वारा इस दिन को बहुत उत्साह और खुशी के साथ मनाया जाता है। विद्यार्थी अपने शिक्षकों को ग्रीटिंग कार्ड देकर बधाई देते हैं। यह सर्वविदित है कि हमारे जीवन को संवारने में शिक्षक एक बड़ी और महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है। सफलता प्राप्ति के लिये वो हमें कई प्रकार से मदद करते हैं जैसे हमारे ज्ञान, कौशल के स्तर, विश्वास आदि को बढ़ाते हैं तथा हमारे जीवन को सही आकार में ढ़ालते है। अत: अपने निष्ठावान शिक्षक के लिए हमारी भी कुछ जिम्मेदारी बनती है।

जीवन में विजय और सफ़लता के लिए शिक्षा ही सबसे अच्छा और शक्तिशाली हथियार है। शिक्षक अपने छात्र का जीवन जिस ओर चाहे अग्रसारित कर सकता है। जिससे उनको एक सफ़ल जीवन मिल सके। अर्थात् शिक्षक पर पूरे देश की जिम्मेदारी होती है कि वह उसके लिए आदर्श नागरिक का निर्माण करे जिससे कि देश का हित हो।

एक शिक्षक ही हमें वो सभी संस्कार देता है, जिससे हम किसी भी मुसीबत का सामना निडर हो कर सकते हैं। शिक्षक हमें स्कूली शिक्षा देने के साथ-साथ जीवन में अनुशासन और मेहनत का महत्त्व सिखाते हैं। शिक्षक हर व्यक्ति के जीवन की रीढ़ होते हैं। हमें शिक्षकों का उचित सम्मान करना चाहिए और उनके बताएं मार्ग पर चलना चाहिए और हमें पूरे दिल से ये प्रतिज्ञा करनी चाहिये कि हम अपने शिक्षक का सम्मान करेंगे; क्योंकि बिना शिक्षक के इस दुनिया में हम सभी अधूरे हैं।

शिक्षक है देश की आस, यही करेंगे देश का विकास।

अनुराधा पटनायक
दामनजोड़ी

गुरु

करे जो
अज्ञान तिमिर का नाश
दिखलाए जो ज्ञान-प्रकाश
करे जो जीवन का मार्गदर्शन
करे जो राष्ट्र का नवनिर्माण।

जीवन पथ पर जो
चलना सिखाए
सही-गलत का भेद बताए
धैर्यता से जो पाठ पढ़ाए;
संकट में जो हौंसला बढ़ाए।

गुरु न करे पक्ष-पात,
जो न देखे जात-पात,
निर्धन हो या धनवान,
उसके नजर में सब समान।

गुरु की महिमा अपरम्पार
अनंत ज्ञान का महासागर
गुरु की महिमा अम्बर-सा विस्तार
गुरु कृपा से मिले मुक्ति का द्वार।

स्नेहा पात्र
दामनजोड़ी

भाई-दूज

भाई-दूज हिंदुओं का प्रमुख त्योहार है। यह त्योहार दीपावली के दो दिन बाद मनाया जाता है। भाई-दूज का त्योहार भाई बहन के पवित्र रिश्ते का प्रतीक है। इस दिन बहन अपने भाई के माथे पर रोली चावल से तिलक लगाती है। इस दिन बहन अपने भाई को नारियल भेंट करती है। बहन भगवान से अपने भाई की सुख समृद्धि तथा खुशहाली की कामना करती है। भाई-दूज पर भाई अपनी बहन को उपहार तथा उसकी रक्षा करने का वचन देता है। भाई-दूज का त्योहार रक्षाबंधन की तरह भाई बहन के रिश्ते को और मजबूत बनाता है।

भाई-दूज को यमद्वितीया तथा भाइ-टीका के नाम से भी जाना जाता है। भाई-दूज का त्योहार सम्पूर्ण भारत में बहुत प्रेम तथा उत्साह के साथ मनाया जाता है। रक्षाबंधन के बाद भाई-दूज ऐसा दूसरा त्योहार है, जो भाई बहन के अगाध प्रेम को समर्पित है। भाई बहन के त्योहार भाई-दूज को लेकर यह मान्यता है कि इस दिन भाई को तिलक लगाकर प्रेम पूर्वक भोजन कराने से परस्पर प्रेम तो बढ़ता ही है, भाई की उम्र भी लंबी हो जाती है।

बहन के प्रति बचपन से ही चिंतित रहने वाले भाई के प्रति प्रेम प्रकट करने का इससे अच्छा अवसर दूसरा नहीं। जितना महत्व रक्षाबंधन को दिया जाता है, उतना ही महत्व भाई-दूज को भी दिया जाना चाहिए। इसदिन सभी बहनें भगवान से अपने भाइयों की लंबी आयु की कामना करती हैं। यह मान्यता है कि इसी दिन यमुना जी ने अपने भाई यमराज से ये वचन लिया था कि भाई-दूज मनाने से यमराज के डर से मुक्ति मिलती है और भाई बहन से प्रेम के साथ ही सौभाग्य में भी बृद्धि होती है। भाई भी अपनी बहनों के उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हैं और अनेक उपहार प्रदान करते हैं।

भाई-दूज को भारत के अलग-अलग राज्यों में भिन्न भिन्न नामों से जाना जाता है। संस्कृत में इसे भागिनीहस्ता भोजन कहते हैं। तो कर्नाटक में इसे सौंदरा बिदिगे के नाम से जाना जाता है। बंगाल में भाई-दूज को भाईफोता, नेपाल में भाई-टीका और महाराष्ट्र में भाव-बीज के रूप में मनाते हैं। इस दिन सभी विवाहित बहनें अपने भाइयों को घर आने का न्यौता देती हैं। भाई-दूज को लेकर कुछ कथाएं भी प्रचलित हैं। कहा जाता है कि इस दिन यमुना ने अपने भाई जमराज को अपने घर पर पूरे आदर व सत्कार के साथ भोजन करवाया था। उस दिन सब ने मिलकर एक महान उत्सव मनाया जो कि यम लोक के लिए खुशियों से भरा था, इसलिए ये दिन तीनों लोकों में यम द्वितीय के नाम से प्रसिद्ध हुआ। जिस दिन यमुना ने यमराज को अपने घर बुलाकर भोजन करवाया था, उस दिन जो भी मनुष्य अपनी बहनों के हाथों से अच्छा भोजन प्राप्त करते हैं, उन्हें मान्यताओं के अनुसार, धन व भोजन की कभी कमी नहीं होती और भाई बहन का प्रेम सदा कायम रहता है।

भाई बहन का यह त्यौहार,
इसमें छिपा है दोनों का प्यार,
खुशकिस्मत हैं वो बहनें, जिन्हें मिले हैं प्यारे भाई,
बहन कुमकुम अक्षत थाल सजाएं,
भाई को प्रेम से तिलक लगाएं,
कामना करती उसकी खुशियों की,
भाई से रक्षा का वचन पाकर, बहनें खुश हो जाएं,
भाई-दूज का एक पर्व है ऐसा
जो हजारों खुशियाँ लेकर आता है,
छोटी सी है मेरी नैया, उसमें बैठे मैं और भैया।
छोटी सी है मेरी नैया, इसमें बैठे मैं और भैया,
दुनिया भरकी सैर करेंगे, तूफानों से नहीं डरेंगे।
साहस है सैनिक जैसा, फिर डर भय कैसा
दुश्मन जो जमाए पैर, नहीं है उसकी हमसे खैर
डटकर लड़ेंगे हम मैदान, जग होगा देख हैरान।

कल्पना दुबे
दामनजोड़ी

कहने को आजाद हम!

न बोल सके,वह आवाज हम
न सुनाई दे ,वह साज हम,
रूहानियत महफूज रख,
बस रूह को आजाद कर,
ना बांट इसे चंद टुकड़ों में,
इसे अखंड कर बस साथ रख,
बस लौ नहीं, वह दीप बन,
संसार को दीप्तिमान कर,
वसुधैव कुटुम्बकम का आह्वान कर,
सदियों से हम विश्व गुरु,
तो खुद का भी सम्मान हम
है डगर कठिन, सफर मुश्किल,
फिर भी हौंसोलों की उड़ान हम,
हर मोड़ पर है भीड़ बड़ी,
अपने ही जड़ते हाथों में बेडिया बड़ी,
प्रचंड बन, मत संताप कर,
बस पथ प्रशस्त कर, विकास कर,
यही है धर्म , यही कर्म हमारा,
यही ईमान, यही प्राण, मन,
हम धरा प्राचीन ,
तो नव निर्मित वसुंधरा भी हम,
अपने आप को संवार चल,
इतिहास से सबक ले,
भविष्य को उज्जवल कर,
है विश्व शांति दूत हम,
है खुद पर हमें विश्वास अटल,
बस इसलिए तो,
कहने को आजाद हम ॥

प्रियंका पाल
अनुगुळ

पिता

मैंने कहा !
माँ बिना यह संसार अधूरा है,
तब मन ने कहा !
क्या बिन पिता यह पूरा है?
यह सुनकर मेरा जहान हिला,
ऐसा जवाब तो मुझे कभी नहीं था मिला,
सोचा मांग लूँ मन से कुछ और प्रश्नों के उत्तर,
माँ की श्रेष्ठता साबित कर, बना दूँ उसे निरुत्तर,
मैंने पूछा !
त्योहारों से पहले न जाने कितनी रातें जागते हैं,
भोर होते ही काम की तरफ भागते हैं,
वक्त कहाँ है उनके पास मेरे लिए,
शाम को भी तो वो लौटते हैं थके हुए,
परीक्षा का परिणाम दिखाया तो बस मुस्कुराए।
कमरे में झांका तो बैठे थे न जाने किन पन्नों को बिछाए ,
समझ नहीं आता कि वो अपनी भावनाएं क्यों नहीं
दिखाते हैं,
मुझे लेकर वो क्या सोचते हैं कभी नहीं बताते हैं,
फिर कैसे कहूँ कि वो भी हैं माँ समान,
ऐसा क्या है उनमें जो वो भी हैं माँ सरीखे महान।
मन हंसा मेरे प्रश्नों पर,
कहा सोच कर ध्यान दो जरा वचनों पर,
तुम्हारी खुशियाँ न हो त्योहारों की मोहताज,
इसलिए वो कई रातें जागते हैं,
परिवार पर हो हमेशा समृद्धि का ताज,
इसलिए भोर होते ही काम की तरफ भागते हैं,
जिंदगी के इम्तेहान में भी तुम हो सफल,
बस बिखरे पन्नों में ढूंढते हैं उसी का हल,
क्या अपनी भावनाएं दिखाना ही है ममत्व का आधार?
क्या उन त्यागों का कोई मोल नहीं जो हैं अनगिनत अपार?
क्या कहूँ कि कितने होते हैं वो पिता महान
जो तब भी मुसकुराते हैं, जब करते हैं अपनी कन्या का दान
कहकर मन ने यह बात!
दे दी मेरी श्रेष्ठता सिद्ध करने की होड़ को मात,
तब मैंने यह जाना कि,
समय की जिस गाड़ी पर मेरा यह जीवन सवार है,
माँ के साथ पिता भी उसका महत्वपूर्ण आधार है।

स्वाती तिवारी
अनुगुळ

उलझन मेरी

क्या सोचूँ तुम्हें,
क्या समझूँ तुम्हें,
क्या बोलूँ तुम्हें,
ऐसी है उलझन मेरी।

तुम हो हर कण में,
तुम ही समाधान में,
तुम ही हर संघर्ष में,
तुम ही सफलता में,
कौन हो तुम! कैसे पहचानूँ,
ऐसी है उलझन मेरी।

शाश्वत है परिभाषा तुम्हारी,
अशेष है अनुकंपा तुम्हारी,
सु-मधुर है वाणी तुम्हारी,
अनन्य है रचना तुम्हारी,
आखिर पहचान करूं कैसे,
ऐसी है उलझन मेरी।

जगदिश हो- महेश्वर हो,
निराकार हो- विघ्नहर्त्ता हो,
पतितपावन हो- सच्चिदानंद हो,
अनंत भी तुम- अनन्य भी हो,
किस नाम से पूजूँ तुम्हें,
ऐसी है उलझन मेरी।

निर्गुण से सगुण तक,
निराधार से आधार तक,
निर्जीव से सजीव तक,
जीवन से मोक्ष तक,
सारे जगत की पराकाष्ठा हो तुम,
तुम ही तो हो सुलझन मेरी॥

-स्वाती सुनीता महापात्र
अनुगुळ

जिंदगी के इस रंगमंच में

जिंदगी के इस रंगमंच में
कितने किरदार निभाते हैं
कुछ मीठे तो कुछ खट्टे
कुछ सीधे तो कुछ टेढ़े;

कभी सोचा ना था कि
कब इतने बड़े हो गए,
कि कब हम खुद
एक किरदार बन गए !

बचपन के वो दिन
जब बैर तोड़ कर खाना,
बारिश में नांगे पांव कूदना;
स्कूल से लौटते ही बक्सा फेंक,
मैदान की ओर भागना,

फिर आई जवानी, और किताबों के बीच
खुद को डूबो लेना;
पता ही नहीं चला कब जवानी बदली
शादी की उमर आ गई और,
पत्नी, बहू के किरदार में ढ़ल जाना;

धीरे-धीरे माँ के किरदार में,
खुद को संजोना और
बच्चों की किलकारियों में
अपना बचपन खोजना;

कभी पत्नी का किरदार,
तो कभी माँ का किरदार,
खुद का किरदार कहीं खो देना;

किरदार निभाते-निभाते कितनों का
साथ छूट जाना,
पर जिंदगी है, जब तक सांस चले,
किरदारों को है निभाना !

वी अनुराधा
दामनजोड़ी

ସାବିତ୍ରୀ ବ୍ରତକୁ ବ୍ୟଙ୍ଗ କରିବାନି... ପବିତ୍ର ଏହାର ଧାରା

ଆମ ପରମ୍ପରା କେତେ ଯେ ସୁନ୍ଦର,
ଧର୍ମ ସଂସ୍କୃତିରେ ଭରା।
ସାବିତ୍ରୀ ବ୍ରତକୁ ବ୍ୟଙ୍ଗ କରିବାନି,
ପବିତ୍ର ଏହାର ଧାରା...
ପବିତ୍ର ଏହାର ଧାରା।।

ପତି ପତ୍ନୀଙ୍କର ଜୀବନର
ଏହା ସବୁଠାରୁ ବଡ଼ ପର୍ବ।
ସ୍ୱାମୀ ପୂଜାକଲେ ପୁଣ୍ୟ ହୋଇଥାଏ,
ସ୍ୱାମୀ ପରା ସୁଖ ସର୍ବ।।

ପ୍ରଜାପତିଙ୍କର ଆଦେଶେ ମିଳନ,
ହୋଇଥାଏ ଭୁ-ମଣ୍ଡଳେ।
ସାତ ଜନ୍ମ ସାଥୀ ମିଳିଥାଏ ପୁଣି,
ସାକ୍ଷୀ ରଖି ଅଗ୍ନି ବଳେ।।

ନାରୀ ପତିବ୍ରତା ନାରୀର ଅସ୍ମିତା,
ବଢ଼ାଏ ପୁରୁଷ ମାନ।

ନାରୀ ପୁରୁଷଙ୍କ ସମ୍ପର୍କକୁ କେବେ,
ଭାବିବାନି ଆମେ ସାନ।।

ଯେଉଁଠି ଦାମ୍ପତ୍ୟ କଳହ ହୁଅଇ,
ହୁଏ ତାର ସର୍ବନାଶ।
ଦୁହିଁଙ୍କ ସମ୍ପର୍କ ବଢ଼େ ଯେଉଁ ଠାରେ,
ସୁଖ କରେ ସଦା ବାସ ।।

ପୁଣ୍ୟ ଏ ସମ୍ପର୍କ ପୁଣ୍ୟ ଏହି ଧାରା,
ସୁସ୍ଥ ପରମ୍ପରା ଏହି।

ଦୁଇ ଜୀବନର ଦୁଇଟି ହୃଦୟ,
ରହେ ଏକତ୍ରିତ ଯହିଁ ।।

ସମ୍ପର୍କ ସୁଦୃଢ଼ ରହିବା ପାଇଁ କି,
ହିନ୍ଦୁ ପୂଜା ପରମ୍ପରା।
ମନର ମିଳନ ତିଷ୍ଠିବା ସହିତ,
ଶୃଙ୍ଖଳିତ ହୁଏ ଧରା।।

ଆମ ପରମ୍ପରା କେତେ ଯେ ସୁନ୍ଦର,
ଧର୍ମ ସଂସ୍କୃତିରେ ଭରା।
ସାବିତ୍ରୀ ବ୍ରତକୁ ବ୍ୟଙ୍ଗ କରିବାନି,
ପବିତ୍ର ଏହାର ଧାରା...
ପବିତ୍ର ଏହାର ଧାରା...
ପବିତ୍ର ଏହାର ଧାରା।।

ଅଣରାସି କମଳା ପାତ୍ର
ଗଞ୍ଜାମ

ରଥଯାତ୍ରା

ନୀଳାଚଳ ନିବାସାୟ ନିତ୍ୟାୟପରମାତ୍ମନେ
ବଳଭଦ୍ର ସୁଭଦ୍ରାଭ୍ୟାମ୍ ଜଗନ୍ନାଥାୟତେ ନମଃ
ଜୟ ଜୟ ଜଗନ୍ନାଥ, ଜୟ ଜୟ ଜଗନ୍ନାଥ।

ଭକ୍ତମାନଙ୍କ ଅଭୟପ୍ରଦ ଦାରୁବ୍ରହ୍ମ ଶ୍ରୀଜଗନ୍ନାଥଙ୍କୁ ଏହି ଧରାଧାମରେ ଧାରଣକରି ପୁରୁଷୋତ୍ତମକ୍ଷେତ୍ର ପବିତ୍ର ଅଟେ। ଏଥିପାଇଁ ଉତ୍କଳଭୂମି ଭାରତ ତଥା ପୃଥିବୀ ମାନଚିତ୍ରରେ ସ୍ଥାନିତ, ସୁପରିଚିତ ଓ ଚିର ବନ୍ଦିତ। ମହାପ୍ରଭୁ ଜଗନ୍ନାଥ କେବଳ ଓଡ଼ିଶାର ଜାତୀୟ ଦେବତା ନୁହନ୍ତି, ସେ ହେଉଛନ୍ତି ଭାରତବର୍ଷର ରାଷ୍ଟ୍ରଦେବତା ଓ ନିଖିଳ ବିଶ୍ୱର ବିଶ୍ୱଦେବତା। ଜଗତକୁ ଆପଣେଇ ସେ ଶ୍ରୀଜଗନ୍ନାଥ ନାମର ମହିମାକୁ ପ୍ରତିପାଦନ କରିଛନ୍ତି। ମହାପ୍ରଭୁଙ୍କର ସବୁ ବଡ଼ ଯେମିତି ସେ ଜଗତର ବଡ଼ଠାକୁର, ତାଙ୍କର ଦାଣ୍ଡ ବଡ଼ଦାଣ୍ଡ, ତାଙ୍କର ଦେଉଳ ବଡ଼ ଦେଉଳ, ତାଙ୍କର ଭୋଗ ମହାପ୍ରସାଦ, ତାଙ୍କର ପଣ୍ଡା ବଡ଼ପଣ୍ଡା ନାମକରଣରେ ଶ୍ରୀଜଗନ୍ନାଥଙ୍କର ମହତ୍ତ୍ୱ ପ୍ରତିପାଦିତ। ତାଙ୍କର ଦ୍ୱାଦଶ ଯାତ୍ରା ମଧ୍ୟରୁ ପୁରାଣ ପ୍ରସିଦ୍ଧ ବିଶ୍ୱବିଖ୍ୟାତ ରଥଯାତ୍ରା ଅନ୍ୟତମ। ଶ୍ରୀକ୍ଷେତ୍ରରେ ରଥଯାତ୍ରାର ଉତ୍ପତ୍ତି ପ୍ରଚଳନ ଓ ପ୍ରସାର କାହିଁ କେତେ କାଳରୁ କେତେ ଯୁଗରୁ ଗଡ଼ି ଆସୁଛି। ରଥ ଏବଂ ଯାତ୍ରା ଏହି ଦୁଇଟି ଶବ୍ଦର ମିଳନରେ ରଥଯାତ୍ରା ଶବ୍ଦର ସୃଷ୍ଟି। ପ୍ରାଚୀନ ଗ୍ରନ୍ଥମାନଙ୍କରେ ରଥଯାତ୍ରାର ବର୍ଣ୍ଣନା ଦେଖିବାକୁ ମିଳେ। ଓଡ଼ିଆ ଭକ୍ତମାନଙ୍କର ରଚନାବଳୀରେ ଶ୍ରୀଶ୍ରୀମହାପ୍ରଭୁଙ୍କର ରଥଯାତ୍ରାର ଅବତାରଣା କରାଯାଇଛି। ପରମ ବିଷ୍ଣୁଭକ୍ତ ମହାରାଜା ଇନ୍ଦ୍ରଦ୍ୟୁମ୍ନ ବିଷ୍ଣୁଙ୍କର ସନ୍ଧାନରେ ଆସି ପୁରୁଷୋତ୍ତମ କ୍ଷେତ୍ରରେ ଯେଉଁ ସ୍ଥାନରେ ସହସ୍ରବର୍ଷ ଯଜ୍ଞ କରାଇଥିଲେ ସେହିଠାରେ ଶ୍ରୀ ଜଗନ୍ନାଥ ତାଙ୍କର ଚତୁର୍ଦ୍ଧାମୂର୍ତ୍ତି ଆବିର୍ଭାବ ହୋଇଥିଲା। ସେହି ସ୍ଥାନ ଶ୍ରୀଜଗନ୍ନାଥ

ମହାପ୍ରଭୁଙ୍କର ଜନ୍ମସ୍ଥାନ ବା ଜନକପୁର ନାମରେ ପରିଚିତ। ବର୍ଷକୁ ଥରେ ଜନ୍ମସ୍ଥାନକୁ ଯିବାପାଇଁ ମହାପ୍ରଭୁଙ୍କର ପ୍ରତିଶୃତିକୁ ପୂରଣ କରିବାପାଇଁ ରଥଯାତ୍ରାର ସୃଷ୍ଟି ବୋଲି କିଂବଦନ୍ତୀ କହେ। ଇନ୍ଦ୍ରଦ୍ୟୁମ୍ନଙ୍କ ଭକ୍ତିମତୀ ରାଣୀ ଗୁଣ୍ଡିଚାଙ୍କ ପବର୍ତ୍ତିତ ଯାତ୍ରା ଗୁଣ୍ଡିଚା ଯାତ୍ରା ନାମରେ ପରିଚିତ।

ରଥଯାତ୍ରାର ମୁଖ୍ୟ ଆକର୍ଷଣ ହେଉଛି ରଥ। ରଥ ତିନୋଟି ନିର୍ମାଣ ପାଇଁ ମାଘ ଶୁକ୍ଳ ପଞ୍ଚମୀଠାରୁ କାଠ ସଂଗ୍ରହ ହୁଏ। ଅକ୍ଷୟ ତୃତୀୟାରେ ଏହି ମହାପ୍ରଭୁଙ୍କର ରଥଖଳାରେ ପୂଜା ବିଧାନ ପରେ ରଥ ନିର୍ମାଣ ବଢ଼େଇ ମାନଙ୍କ ଦ୍ୱାରା ଯଥା ନିୟମରେ ଅନୁଷ୍ଠିତ ହୋଇ ଯାତ୍ରା ପୂର୍ବଦିନ ସିଂହଦ୍ୱାର ନିକଟରେ ସଜ୍ଜିତ ହୋଇ ରହେ। ଶ୍ରୀଜଗନ୍ନାଥଙ୍କ ରଥ ନନ୍ଦିଘୋଷ। ଏହି ରଥରେ ୧୬ଟି ଚକ ରହିଛି। ରଥରେ ଧବଳବର୍ଣ୍ଣର ଚାରି ଅଶ୍ୱ ସଂଯୁକ୍ତ ରଥର ସାରଥି ହେଉଛନ୍ତି ଦାରୁକ। ରଥର ନବପାର୍ଶ୍ୱରେ ଅନ୍ୟାନ୍ୟ ଦେବାଦେବୀ ବିରାଜମାନ। ଜଗନ୍ନାଥଙ୍କ ରଥ ରକ୍ତପୀତବସ୍ତ୍ରରେ ରଥ ଆଚ୍ଛାଦିତ ଓ ସୁଶୋଭିତ ହୋଇଥାଏ। ବଳଭଦ୍ର ଜ୍ୟେଷ୍ଠଭ୍ରାତାଙ୍କ ରଥର ନାମ ତାଳଧ୍ୱଜ। ଏହି ରଥରେ ୧୪ଟି ଚକ ଲାଗି ଥାଏ। ରଥ ଟାଣୁଥିବା ଚାରି ଅଶ୍ୱ କଳାରଙ୍ଗର। ରଥର ସାରଥିଙ୍କ ନାମ ମାତଳି। ଏହି ରଥରେ ମଧ ବିଭିନ୍ନ ଦେବାଦେବୀ, ସ୍ୱ,ସ୍ୱ ସ୍ଥାନରେ ଅବସ୍ଥିତ। ରଥାଭରଣ ରକ୍ତନୀଳ ରଙ୍ଗର ଅଟେ। ଦେବତାମାନଙ୍କ ଦାରା ପ୍ରଦତ୍ତ ସୁଭଦ୍ରା ଦେବୀଙ୍କ ରଥର ନାମ ଦେବଦଳନ ବା ଦର୍ପଦଳନ ବା ପଦ୍ମଧ୍ୱଜ। ରଥର ଚକସଂଖ୍ୟା ୧୨। ରଥରେ ଚାରି ଅଶ୍ୱଯୋଚିତ। ଏହି ରଥର ସାରଥି ହେଉଛନ୍ତି ଅର୍ଜୁନ। ଏହି ରଥରେ ମଧ ପାର୍ଶ୍ୱଦେବତାମାନେ ନିଜନିଜ ସ୍ଥାନରେ ବିରାଜିତ।

ସୁଭଦ୍ରାଙ୍କ ରଥ ରକ୍ତନୀଳ ବସ୍ତ୍ରରେ ଆଚ୍ଛାଦିତ। ରଥଗୁଡ଼ିକ କାଠରେ ନିର୍ମିତ ହୋଇଥିଲେ ମଧ ଅସାମାନ୍ୟ, ମହତ୍ତ୍ୱପୂର୍ଣ୍ଣ ଓ ଆଧାତ୍ମିକ। ଆଷାଢ଼ ମାସ ଶୁକ୍ଳପକ୍ଷ ଦ୍ୱିତୀୟା ତିଥିରେ ରଥଯାତ୍ରାର ପର୍ବ ଆମର ପାଳିତ ହୋଇଥାଏ । ସେଦିନ ଶ୍ରୀମନ୍ଦିରରେ ମଙ୍ଗଳଆଳତି, ସୂର୍ଯ୍ୟପୂଜା ଓ ବେଶ ପ୍ରଭୃତି କାର୍ଯ୍ୟ ଯଥା ସମୟରେ ସମ୍ପନ୍ନ ହେବାପରେ ରଥ ପ୍ରତିଷ୍ଠା ଓ ମଙ୍ଗଳାର୍ପଣ ଶେଷହୁଏ। ପରେ ପାରମ୍ପରିକ ରୀତିରେ ଠାକୁରମାନେ ରତ୍ନସିଂହାସନରୁ ରଥ ଉପରକୁ ଯାତ୍ରା କରିଥାନ୍ତି। ଏହି ଯାତ୍ରାକୁ ପହଣ୍ଡିବିଜେ କହନ୍ତି। ପହଣ୍ଡି ସମୟର ଦୃଶ୍ୟ ଅତୀବ ଚିତ୍ତାକର୍ଷକ। ପ୍ରଥମେ ଭଗବାନ ସୁଦର୍ଶନ ସୁଭଦ୍ରା ରଥରେ ଆସୀନ ହେବାପରେ କ୍ରମାନ୍ୱୟରେ ପହଣ୍ଡିରେ ଯାଇ ବଳଭଦ୍ର, ସୁଭଦ୍ରା ଓ ଜଗନ୍ନାଥ ନିଜ ନିଜ ରଥସ୍ଥ ସିଂହାସନରେ ବିଜେ କରନ୍ତି। ଏହାପରେ ମଦନମୋହନ ରଥରେ ବିଜେ କଲାପରେ ଦେବତାମାନଙ୍କର ଚିତାଲାଗି ସମ୍ପନ୍ନ ହୁଏ। ଶ୍ରୀଜଗନ୍ନାଥଙ୍କର ପ୍ରଥମ ଓ ପ୍ରଧାନ ସେବକ ଉତ୍କଳର ଗଜପତି ମହାରାଜ, ରଥ ତ୍ରୟରେ ନିଜର ସେବା ଛେରାପହଁରା କାର୍ଯ୍ୟ ଶେଷ କରନ୍ତି। ପରେ ପରେ ଚାରମାଳ ଫିଟା ଓ ଘୋଡ଼ା ସାରଥି ଲାଗିବା ପରେ ଭକ୍ତମାନଙ୍କ ଦ୍ୱାରା ରଥ ଟଣା ଆରମ୍ଭ ହୁଏ। ପ୍ରଥମେ ବଳଭଦ୍ର ପରେ ସୁଭଦ୍ରା ଓ ଶେଷରେ ଜଗନ୍ନାଥଙ୍କର ରଥଟଣା ହୁଏ। ଗୁଣ୍ଡିଚାମନ୍ଦିରଠାରେ ପହଞ୍ଚିବା ପରେ ଠାକୁରମାନଙ୍କୁ ପହଣ୍ଡିକରି ମନ୍ଦିରକୁ ନିଆଯାଏ। ଗୁଣ୍ଡିଚାମନ୍ଦିରରେ ଠାକୁରମାନେ ସାତଦିନ ଅବସ୍ଥାନ କରନ୍ତି। ଦଶମୀ ତିଥିରେ ବା ଯାତ୍ରାର ନବମ ଦିନ ତିନିଠାକୁରଙ୍କୁ ଓ ସୁଦର୍ଶନ ରଥାରୁଢ଼ ହୋଇ ବଡ଼ଦେଉଳ ଉଦ୍ଦେଶ୍ୟରେ ପ୍ରତ୍ୟାବର୍ତ୍ତିତ କରନ୍ତି। ଏହାକୁ ବାହୁଡ଼ାଯାତ୍ରା କୁହାଯାଏ। ଫେରନ୍ତା ବାଟରେ ମାଉସୀମା' ମନ୍ଦିରରେ ଦେବତାମାନଙ୍କୁ ପୋଡ଼ପିଠା ଲାଗି କରାଯାଏ। ସିଂହଦ୍ୱାରଠାରେ ସବୁରଥ ପହଞ୍ଚିବା ପରେ ବଡ଼ ଏକାଦଶୀ ଦିନ ଠାକୁରଙ୍କର ସୁନାବେଶ କରାଯାଏ। ପ୍ରଭୁମାନଙ୍କର ଏହି କମନୀୟ ଦେବଦୁର୍ଲ୍ଲଭ ରୂପ ଭକ୍ତମାନଙ୍କର ପ୍ରାଣକୁ ଆହ୍ଲାଦିତ କରିଥାଏ ଏବଂ ତା ପରଦିନ ଅଧରପଣା ଭୋଗ ପରେ ପହଣ୍ଡିରେ ବଳଭଦ୍ର ଓ ସୁଭଦ୍ରା ରତ୍ନସିଂହାସନରେ ଅଧିଷ୍ଠାନ କଲାବେଳେ ଶ୍ରୀଜଗନ୍ନାଥଙ୍କ ପାଇଁ ଲକ୍ଷ୍ମୀ ଦ୍ୱାର ବନ୍ଦ କରି ଦିଅନ୍ତି। ଉଭୟ ପକ୍ଷର ସେବାୟତଙ୍କ ମଧରେ ବଚନିକା ପରେ ଜଗନ୍ନାଥଙ୍କୁ ସିଂହାସନରେ ବିଜେ ପାଇଁ ଅନୁମତି ମିଳେ। ଲକ୍ଷ୍ମୀନାରାୟଣଙ୍କ ଭେଟ ପରେ ଦୁଆରଫିଟା ଉତ୍ସବ ସରେ। ମହାବାହୁ ଶ୍ରୀଜଗନ୍ନାଥ ରତ୍ନସିଂହାସନରେ ବିଜେ କଲାପରେ ରଥଯାତ୍ରାର ପରିସମାପ୍ତି ହୋଇଥାଏ।

ନିଳାଦ୍ରୌ ଶଙ୍ଖମଧ ଶତଦଳେକମଳେ ରତ୍ନସିଂହାସନସ୍ଥଂ
ସର୍ବାଳଙ୍କାରଯୁକ୍ତ ନବଘନରୁଚିରଂ ସଂଯୁତଂ ଚାଗ୍ରଜେନ
ଭଦ୍ରାୟା ବାମଭାଗେ ରଥଚରଣଯୁତଂ ବ୍ରହ୍ମରୁଦ୍ରେନ୍ଦ୍ରବନ୍ଦ୍ୟ
ବେଦାନାଂ ସାରମୀଶଂ ସ୍ୱଜନପରିବୃତଂ ବ୍ରହ୍ମଦାରୁଂ ଭଜେହଂ।।

ରଥଯାତ୍ରାରେ ତିନିଠାକୁରଙ୍କୁ ଦର୍ଶନ କଲେ ନିର୍ବାଣ ଲାଭ ହୁଏ। ସଂସାର ଚକ୍ରରେ ଘାଣ୍ଟି ହେବାପାଇଁ ଆଉ ଜନ୍ମ ନେବାକୁ ପଡ଼େନାହିଁ ବୋଲି ପୁରାଣ କହେ। ଜାତିଧର୍ମ ବର୍ଣ୍ଣ ନିର୍ବିଶେଷରେ ସମସ୍ତଙ୍କୁ ଆଶୀର୍ବାଦ ଦେବାକୁ ତିନି ଠାକୁରେ ବଡ଼ଦାଣ୍ଡକୁ ଓହ୍ଲାଇ ଆସନ୍ତି। ରଥଯାତ୍ରାର ଅନ୍ୟନାମ ପତିତପାବନଯାତ୍ରା। ପତିତଉଦ୍ଧାର ଓ ବିଶ୍ୱର କଲ୍ୟାଣ ସାଧନ, ଧର୍ମ ସମନ୍ୱୟତା ରଥଯାତ୍ରାର ଆଦର୍ଶ। ଧର୍ମର ରକ୍ଷା, ଯୁଗେଯୁଗେ ମାନବ ଜାତିର କଲ୍ୟାଣ ନିମିତ୍ତ ଓ ଧର୍ମର ସ୍ଥାପନାର ପବିତ୍ରତା ବଜାୟ ରହିଥାଉ ଏହାହିଁ ରଥଯାତ୍ରାର ମହାନତା। ସାମ୍ୟ, ମୈତ୍ରୀ ପ୍ରିତିର ସାର୍ଥକତା ଏହାର ଉଦ୍ଦେଶ୍ୟ। ଜୟ ଜୟ ଜଗନ୍ନାଥ, ଜୟ ଜୟ ଜଗନ୍ନାଥ, ନୀଳାଚଳ ଧାମର ମହାପ୍ରଭୁଙ୍କ ପାଦତଳେ କୋଟି କୋଟି ପ୍ରଣାମ।

ମମତା ରାଉତ
ଅନୁଗୁଳ

ତୁମେ ଅନୁଭବର ଠାକୁର

ରଥଯାତ୍ରାର ଧାରା ବିବରଣୀ ଟିଭିରେ ଚାଲିଛି । ବାପା, ମାଆ, ଜେଜେମା ଆଉ ଆମେ ଭାଇ ଭଉଣୀ ସମସ୍ତେ ସେଦିନ ରଥଯାତ୍ରା ଦେଖୁଥାଉ ଟିଭିରେ । ସୁଦର୍ଶନ, ବଡ଼ଠାକୁର, ମାଆ ସୁଭଦ୍ରା ସମସ୍ତଙ୍କର ପହଣ୍ଡି ସରିଗଲାଣି । ଶେଷରେ ଜଗତର ନାଥ ଜଗନ୍ନାଥଙ୍କର ପହଣ୍ଡି ଆରମ୍ଭ ହେଲା । ଟାହିଆ ହଲେଇ ହଲେଇ ପ୍ରଭୁ ଝୁଲି ଝୁଲି ବଡ଼ଦାଣ୍ଡକୁ ବିଜେ କଲେ । ହୁଳହୁଳି, ହରିବୋଲ, ଘଣ୍ଟଘଣ୍ଟା ବାଦ୍ୟରେ ବଡ଼ଦାଣ୍ଡ ପୁରି ଉଠୁଥାଏ । ଠାକୁର ଚାଲିଥାଆନ୍ତି । କିଏ ନାଚ କରୁଛି, କିଏ ଗୀତ ଗାଉଛି, କିଏ କେତେ ପ୍ରକାର ବେଶ ହୋଇ ଖେଳ ଦେଖାଉଥାଆନ୍ତି । ସମସ୍ତଙ୍କଠାରେ ଭକ୍ତିର ଭାବ, ସେ ପରା ଭାବର ଠାକୁର । ବରଷକେ ଥରେ ଆମ ପାଖକୁ ରତ୍ନସିଂହାସନ ଛାଡ଼ି ଓହ୍ଲାଇ ଆସନ୍ତି, କେତେ କଷ୍ଟ ସହନ୍ତି ଜଗତର ପ୍ରଭୁ ତାଙ୍କର ଭକ୍ତଙ୍କ ସହିତ ଏକାକାର ହେବାପାଇଁ । ସେ ପରା ଦୀନବାନ୍ଧବ, ସେ କରୁଣାର ସିନ୍ଧୁ । ସେ ଦୁଃଖୀର ଦୁଃଖହାରୀ, ତାଙ୍କୁ ହୃଦୟର ସହ ଭକ୍ତି କଲେ ସେ ଟାଣି ହୋଇ ଆସନ୍ତି ପରା, ତାଙ୍କର ଭକ୍ତମାନଙ୍କ ପାଖକୁ । ଏମିତି କେତେ କଥା ସେଦିନ ଧାରା ବିବରଣୀରେ ଅନେକ ଜ୍ଞାନୀ ଗୁଣୀ ବକ୍ତା କହୁଥାଆନ୍ତି । ଆମେ ସମସ୍ତେ ତନ୍ମୟ ହୋଇ ମହାପ୍ରଭୁଙ୍କର ରଥଯାତ୍ରା ଦେଖୁଥାଉ ଆଉ ଶୁଣୁଥାଉ ।

ବାପା ହଠାତ୍ କହିଉଠିଲେ ଏଥର ଆମେ ଠାକୁରଙ୍କର ସୁନାବେଶ ଦେଖିବାକୁ ଯିବା । ଘରେ ଆମେ ସମସ୍ତେ ଖୁବ୍ ଖୁସି ହେଇଗଲୁ । କେବଳ ଫଟୋରେ ଦେଖିଥିବା ସୁନାବେଶକୁ ନିଜ ଆଖିରେ ଦେଖିବୁ । ଏ ଜୀବନ ସାର୍ଥକ କରିବୁ । ଏକଥା ଭାବି ଭାବି ସମସ୍ତେ ଦିନ ଗଣୁଥାଉ କୋଉଦିନ ବଡ଼ ଏକାଦଶୀ ପଡ଼ିବ । ଆମେ ସବୁ ଯିବୁ ମହାପ୍ରଭୁ ଜଗନ୍ନାଥ, ମାଆ ସୁଭଦ୍ରା ଆଉ ବଡ଼ଠାକୁର ବଳଭଦ୍ରଙ୍କର ସୁନାବେଶ ଦେଖିବୁ । ସେଦିନ ସନ୍ଧ୍ୟାବେଳେ ଆମେ ସମସ୍ତେ ଭୁବନେଶ୍ୱରରୁ ଗାଡ଼ିକରି ପୁରୀ ବାହାରି ପଡ଼ିଲୁ । ପୁରୀରେ ପହଞ୍ଚିବା ପରେ ବିଶାଳ ଜନସମୁଦ୍ର ଦେଖି ବିଶ୍ୱାସ ହେଉ ନ ଥାଏ ଯେ ଆମେ ଠାକୁରମାନଙ୍କର ସେଇ ରାଜାଧିରାଜବେଶ ଦର୍ଶନ କରିପାରିବୁ । ଆଖି ଆଗରେ ବିଶାଳ ଜନସମୁଦ୍ର । ତା ଭିତରେ ଯାଇ ଦର୍ଶନ କରିବା ବହୁତ କଷ୍ଟ ମନେ ହେଉଥାଏ । ଏତିକିବେଳେ ଆମେ ପିଲାମାନେ ମନାକଲୁ । ଆମେ ଗାଡ଼ିରେ ଅଛୁ । ବାପା, ମାଆ ଓ ଜେଜେମା ଯାଇ ଭଗବାନଙ୍କୁ ଦର୍ଶନ କରି ଆସ । ଆମ ଚାରି ଭାଇ, ଭଉଣୀଙ୍କୁ ଛାଡ଼ି ସେମାନେ ଠାକୁରଙ୍କର ସେଇ ମନଲୋଭା ସୁନାବେଶ ଦେଖିବାକୁ ଯିବାକୁ ରାଜି ହେଲେନି । ତେଣୁ ସମସ୍ତେ ସେଇ ଭିଡ଼ ଭିତରେ ବଡ଼ଦାଣ୍ଡରେ ତିନିରଥ ପାଖକୁ ଚାଲିଲୁ । ଏତେ ବିଶାଳ ଜନ ସମୁଦ୍ର ଭିତରେ କେମିତି ଆମେ ରଥ ପାଖରେ ପହଞ୍ଚିବୁ ସେଇ ଚିନ୍ତାରେ ଥାଉ । ହଠାତ୍ ଦେବଦୂତ ପରି ଜଣେ ପୋଲିସ୍ ଭାଇ ଭିଡ଼ ଭିତରୁ ବାହାରି ଆସିଲେ । ଆଉ ଆମ ସମସ୍ତଙ୍କୁ ବାଟ କଢ଼େଇ କଢ଼େଇ ରଥ ସମ୍ମୁଖକୁ ନେଇଗଲେ । ପ୍ରଥମେ ପ୍ରଭୁ ଶ୍ରୀଜଗନ୍ନାଥଙ୍କର ସୁନାବେଶ ମନଭରି ଦେଖିଲୁ । ଯେତେ ଦେଖିଲେ ବି ଆହୁରି ଦେଖିବାକୁ ମନ ହେଉଥାଏ । ସେ ପୋଲିସ ଭାଇ କହୁଥାନ୍ତି ମଉସା ଆପଣମାନେ ସମସ୍ତେ ମନପୁରେଇ ଦେଖନ୍ତୁ । ମୁଁ ଏଇଠି ଅଛି । ତା ପରେ ଭିଡ଼ ଭିତରେ ରାସ୍ତା କରି କରି ମା ସୁଭଦ୍ରାଙ୍କ ରଥ ସମ୍ମୁଖକୁ ନେଇଗଲେ । ତାପରେ ବଡ଼ଠାକୁରଙ୍କୁ ବି ଆମେ ସମସ୍ତେ ମନଭରି ଦର୍ଶନ କଲୁ । ଏତେ ମନଲୋଭା ସୁନାବେଶ ଦେଖି ଆମର ମନ ଆନନ୍ଦରେ ପୂର୍ଣ୍ଣ ହୋଇଯାଇଥାଏ । ତା ପରେ ବାପା କହିଲେ ଚାଲ ସେ ପୋଲିସ୍ ଭାଇଙ୍କୁ ଟିକିଏ ଧନ୍ୟବାଦ ଜଣାଇ ଦେଇ ଫେରିଯିବା । ତା'ପରେ ଆମେ ବହୁତ ଖୋଜିଲୁ ହେଲେ ତାଙ୍କୁ ଆଉ ପାଇ ନ ଥିଲୁ । ଆମ ସମସ୍ତଙ୍କ ଆଖି ଲୁହରେ ଭରିଗଲା । ଭଗବାନ ତାଙ୍କର କୌଣସି ସନ୍ତାନକୁ ତାଙ୍କ କରୁଣାରୁ ବଞ୍ଚିତ କରନ୍ତି ନାହିଁ । ସେଇଥିପାଇଁ ତ ସେ କରୁଣାର ସାଗର । ହୁଏତ କାହାପାଇଁ ଏହା ଏକ ସାଧାରଣ କଥା ହୋଇପାରିଥାଏ କିନ୍ତୁ ଆମ ପରିବାର ପାଇଁ ଏହା ନିଳାଦ୍ରୀବିହାରୀଙ୍କର କୃପାଛଡ଼ା ଆଉ କିଛି ନ ଥିଲା ।

ଜୟ ଶ୍ରୀଜଗନ୍ନାଥ

ସୀମା ମିଶ୍ର
ଦାମନଯୋଡ଼ି

ପିତୃଦିବସ

ଆମ ଦେଶ ଭାରତରେ ପିତୃଦିବସ କେବଳ ପାଶ୍ଚାତ୍ୟ ସଭ୍ୟତାର ଏକ ଅନୁକରଣ ଅଟେ। ଆମ ଦେଶରେ ଶିଶୁ ଜନ୍ମଠାରୁ ତାର ଶେଷ ଜୀବନ ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ତା ପିତାଙ୍କ ପ୍ରତି ସମର୍ପିତ ହୋଇଥାଏ। ସମର୍ପଣର ସ୍ୱଭାବ ପାଶ୍ଚାତ୍ୟ ଦେଶମାନଙ୍କରେ ନ ଥାଏ।

କିଛି ମୋ ନିଜ ଅନୁଭୂତିରୁ ପ୍ରକାଶ କରିବାକୁ ଯାଉଛି...

ଛୋଟବେଳେ ମା ସବୁକିଛି ବୋଲି ଭାବୁଥିଲି କାରଣ ବାପାଙ୍କୁ ଭାରି ଡରୁଥିଲି। ବଡ଼ ହେଲାପରେ ଦୁନିଆକୁ ଟିକେ ବୁଝିଲି, ମନ ଓ ମସ୍ତିଷ୍କ କହିଲା "ବାପା ବହୁତ କିଛି"। ମାର ମାତୃତ୍ୱ ପିତା ବିନା ଅସମ୍ଭବ। କୁନିକୁନି ହାତ ଗୋଡ଼ ନେଇ ୭ମାସର ଶିଶୁ (୪୦ ବର୍ଷ ପୂର୍ବର କଥା) ବ୍ରହ୍ମପୁର ହସପିଟାଲରେ ଜନ୍ମ ହୋଇଥିଲି। ମାଙ୍କର ସିଜାରିଆନ ଅପରେସନ ହୋଇଥିଲା। ଏକ କାଚ ବାକ୍ସ ଭିତରେ ମୋତେ ରଖାଯାଇଥିଲା ଓ ନଳୀବାଟେ ଖାଦ୍ୟ ଦିଆଯାଉଥିଲା। ମୋତେ ଦେଖିବାକୁ ଲୋକଙ୍କର ଭିଡ଼ ଥାଏ, ଭିଡ଼ରେ ଦେଖିସାରି କହି ଯାଉଥାନ୍ତି: 'ପିଲାଟି ବେଶିଦିନ ବଞ୍ଚିବ ନ ପାରେ ୭ମାସର ଛୁଆ।'

ବାପାଙ୍କର ଆଗରୁ ୨ଟି କନ୍ୟା ଓ ୧ ପୁତ୍ର ଥିବାରୁ ଆଉ ଗୋଟେ ଝିଅ ଦେଖି ମନ ଖରାପ ହେଲା।

କିଛିଦିନ ବିତିଗଲା ମା ଓ ବାପା ଉଭୟ ଚାକିରିଆ। ସଜନୀ ମୋତେ ଘରେ ରଖିଥିଲା। କିଛିଦିନ ପରେ ସଜନୀ ବି ତା ବାପା ମା ସହ ତା' ଘରକୁ ଗଲା। ତାର ବାହାଘର ଠିକ୍ ହୋଇଯାଇଥିଲା। ଗଲାବେଳେ ମୋର କୁନି କୁନି ହାତ ଗୋଡ଼ ଧରି ବହୁତ କାନ୍ଦିଲା। ଧୀରେ ଧୀରେ ମୁଁ ବଡ଼ ହୋଇଗଲି। ବୋଉଙ୍କୁ ବେଳେବେଳେ ପ୍ରଶ୍ନକଲି ବୋଉ ତମର ତ ତିନୋଟି ଛୁଆ ଥିଲେ ପୁଣି ମୋତେ କାହିଁ ଏ ଦୁନିଆକୁ ଆଣିଲ। ବୋଉ ସବୁବେଳେ ଉତ୍ତର ଦିଅନ୍ତି ଭଗବାନ କିଛି ଉଦ୍ଦେଶ୍ୟରେ ମୋ ପାଖକୁ ତତେ ପଠାଇଛନ୍ତି। ମୁଁ ଟିକେ ରାଗିଯାଉଥିଲି ଓ ଚିଡ଼ି ବି ଯାଉଥିଲି କାରଣ ମା ସବୁବେଳେ ବଡ଼ ଭଉଣୀ ଓ ଭାଇକୁ ବେଶି ଧ୍ୟାନ ଦିଅନ୍ତି। ସାନ ବୋଲି ଘରେ ବଡ଼ ଭାଇ ଭଉଣୀ ବହୁତ ଗେହ୍ଲା କରନ୍ତି, ବୋଉ ମଧ୍ୟ। ବାପାଙ୍କର ଡର ଥିଲା ଆମପାଇଁ ଶାସନ। କେବେ ବାପାଙ୍କୁ ଆମକୁ ଗାଳି ଦେବାକୁ ପଡ଼ିନି ଖାଲି ଟିକେ ବଡ଼ ଆଖି ଦେଖାଇ ଆମ ଆଗରେ ଠିଆ ହେଇଗଲେ ମାନେ ସବୁ ନିଜକାମ ସମୟରେ କରିଚାଲୁ ଭୁଲ ହେବାର ପ୍ରଶ୍ନ ଉଠେନାହିଁ।

ସେହି ଆଖି ସେହି ଡର ଥିଲା ଆମ ପାଇଁ ଶାସନ। ମଉନ ରହି ଆମକୁ କରିଥିବା ଶାସନରେ ଥିଲା ତାଙ୍କର ସ୍ନେହ।

ସମ୍ବଲପୁରରେ ତିନିମହଲା building ର ଉପର ଘରେ ଆମେ ରହୁଥିଲୁ। ତଳ ମହଲା ଥିଲା ବାପାଙ୍କ office (Central Govt. office) ୫ଟା ବେଳେ office ଛୁଟି ହୁଏ। ମୋର ବୟସ ୫ ବର୍ଷରୁ କମ ଥାଏ। ଠିକ୍ office ଛୁଟି ହେଲା ସମୟରେ ମୁଁ ମୋ ସାଙ୍ଗମାନଙ୍କ ସହ ଖେଳୁଖେଳୁ ଏକ ନଡ଼ିଆ ଶଢା (ଖୋଳପା) ଉପରୁ ତଳକୁ ପକାଇ ଦେଇଥିଲି।

ବାପା office ସାରି ଉପରକୁ ଆସିଲେ। ମୋତେ ଟେକିନେଇ ତିନି ମହଲା ଉପରୁ ପକାଇ ଦେବେ ବୋଲି କହିଲେ। ମୁଁ ଡରିଡରି ମୋର ଆଉ ଅବସ୍ଥା ନାହିଁ। ବାପା ମୋ ଡର ଦେଖି ଟିକେ ଟିକେ ମୁରୁକି ମୁରୁକି ହସୁଥିଲେ। ମୋତେ କହିଲେ କୌଣସି office staff ମୁଣ୍ଡରେ ଯଦି ପଡ଼ି ଯାଇଥାନ୍ତା? ସେ ଦିନ ମୋ ଭୁଲ ମୁଁ ବୁଝିପାରିଲି। ମୋ ଭୁଲ ପାଇଁ ମୋ ବାପାଙ୍କ ସମ୍ମାନ ହାନି ହୋଇଥାନ୍ତା।

ବାପା ଆସାମ, ମେଘାଳୟ, ସିକିମ୍, କୋହିମା, ରାୟପୁର, ତ୍ରିପୁରା, ମଣିପୁର, ଦିଲ୍ଲୀ, ଭୁବନେଶ୍ୱର, କଟକ ଓ ଶିଲଂ ଆଦି ବିଭିନ୍ନ ରାଜ୍ୟରେ କାମ କରିଥିଲେ। DD Nationalର chief Director ଭାବରେ (Sports & News Chief Director)ଭାବରେ କାମ କରୁଥିବା ସମୟରେ ବହୁ ସମ୍ମାନ ଓ ପ୍ରତିଷ୍ଠିତ ବ୍ୟକ୍ତି ଯେପରି ପି.ଏ ସାଙ୍ଗମା, ଶ୍ରୀମତୀ ବୀଣାଦେବୀ, ଅନୁପମ ଖେର, ଡ୍ୟାନି ଡେଞ୍ଜୋମ୍ପା, ଆଶା ପାରେଖ, ଅମିତାଭ ବଚ୍ଚନ ଆଦି ଲୋକଙ୍କ ସମ୍ପର୍କରେ ବାପା ଆସିଥିବାର ମୁଁ ପିଲାଟି ଦିନରୁ ଦେଖିଛି।

ଦୀପାବଳି ଓ ଦଶହରାରେ ଘରେ Gift ଓ Sweets packets ଅତିଥି ଓ office କର୍ମଚାରୀଙ୍କ ଘରକୁ ଶୁଭେଚ୍ଛା ଦେବାପାଇଁ ଆସିବାର ଭିଡ଼ ଜମିଯାଏ। ବାପାଙ୍କ ପଦ ପ୍ରତିଷ୍ଠା ନେଇ ସର୍ବଦା ମନରେ ବାପାଙ୍କ ପ୍ରତି ସ୍ନେହ ଓ ଗର୍ବ ଓ ଅଭିମାନ ଥାଏ। କିଛି ବର୍ଷ ଗଲାପରେ ବାପା ଅବସର ନେଲେ। ସବୁ ପିଲାଙ୍କ ବାହାଘର ସହ ବଡ଼ବାପାଙ୍କ ସବୁ ପିଲାଙ୍କ ମଧ୍ୟ ବାହାଘର ଦାୟିତ୍ୱ ବାପା ନେଇଥିଲେ। ଖୁସିରେ କେତେଦିନ ବିତିଗଲା । ନାତି ନାତୁଣୀ ବଡ଼ ହୋଇଗଲେ।

କରୋନା ମହାମାରୀ ସବୁ ରାସ୍ତାଘାଟ, ଟ୍ରେନ୍, ଫ୍ଲାଇଟ୍ ଏପରିକି ବାଟରେ ଗାଡ଼ି ମଧ୍ୟ ଯିବା ବନ୍ଦ ହୋଇଯାଇଥିଲା। ବାପା ତାଙ୍କର ଶେଷ ନିଶ୍ୱାସ ଗଣୁଥିଲେ ଅକ୍ସିଜେନ ସିଲିଣ୍ଡର ଦ୍ୱାରା ନିଶ୍ୱାସ ନେଉଥିଲେ ଘରେ ଚଳପ୍ରଚଳ ଅତି ଧୀର ଭାବରେ କରୁଥିଲେ।

ମୁଁ ଜଣେ ହିଁ ବାପାଙ୍କର ସାନ ଝିଅ ଯିଏ ଓଡ଼ିଶା ଭିତରେ ଥିଲି। ବାକି ସବୁ ଭାଇ ଭଉଣୀ ଓଡ଼ିଶା ଓ ଭାରତ ବାହାରେ, କେହି ଆସି ପାରୁ ନ ଥାନ୍ତି। ସେ ଦିନ ମୋ ପାଇଁ ଏକ କାଳ ଦିବସ ସ୍ୱରୂପ ଥିଲା। ରାତି ୯.୧୫ ମିନିଟ୍ ବାପା ତାଙ୍କ ଟେବୁଲ ଚେୟାରରେ ବସି ସବୁ କାମ କରନ୍ତି ଯେମିତି, ତାଙ୍କ ଲେଖାପଢ଼ା ସମାଜ ପଢ଼ିବା, ସୁଡୋକୁ solve କରିବା, ପାନ ଖାଇବା, ମେଡିସିନ ଖାଇବା ଇତ୍ୟାଦି। ସେହି ଚେୟାର ଉପରେ ବସିକି ବାପା ଟିକେ ଢଳିପଡ଼ିଲେ। ସଙ୍ଗେ ସଙ୍ଗେ ଆମ୍ବୁଲାନ୍ସ ଡାକିଲୁ। ପାଖରେ କେହି ଲୋକ ନ ଥାନ୍ତି (କରୋନା କଟକଣା) ଲାଇନ ନ ଥିବାରୁ ଲିଫ୍ଟ କାମ ଦେଲାନି। ୪ ମହଲା ଉପରୁ ମାମୁଁ, ମୁଁ, ସିକ୍ୟୁରିଟି ଗାର୍ଡ ବାପାଙ୍କୁ ହ୍ୱିଲ ଚେୟାରରେ ତଳକୁ ଆଣିଲୁ ଆମ୍ବୁଲାନ୍ସରେ ଭର୍ତ୍ତିକଲୁ। ହସ୍ପିଟାଲ ନେଲାବେଳେ ମୋ ହାତ ବାପାଙ୍କ ପିଠିକୁ କୋଳାଇ ଧରିଥାଏ । ୪୦ ବର୍ଷ ବୟସରେ କେବେ ନିଜ ଲୋକଙ୍କୁ ନିଜ ଆଖିଆଗରେ ଯିବାର ଦେଖିନଥିଲି। ନିଜ ବାପାଙ୍କୁ ନିଜ ହାତ ଉପରେ ରଖି ତାଙ୍କ ଶେଷ ନିଶ୍ୱାସ ଯିବାର ଅନୁଭୂତି ମୋ ଛାତିକୁ ଥରାଇ ଦେଉଥିଲା। ତଥାପି ମୋତେ ଏତେ ସ୍ଥିର କିପରି ଭଗବାନ ରଖିଥାନ୍ତି ମୁଁ ବୁଝିପାରୁନଥାଏ।

ପରଦିନ ବାପାଙ୍କର ସବୁକାର୍ଯ୍ୟ ସ୍ଥିର ମନ ସହ ସମ୍ପୂର୍ଣ୍ଣ କରିପାରିଲି। ଘରୁ ଗହଳି କମିଗଲା। ଘର ପୁରା ଶୂନଶାନ। କେହି ବଡ଼ଭାଇ ଭଉଣୀ କରୋନା କଟକଣା ପାଇଁ ଆସିପାରିଲେନି। ଘରେ ଏକାନ୍ତ ଜାଗାରେ ବସି ଭାବିଲି ଏ ଦୁଇ ଦିନ ଭିତରେ କଣ ସବୁ ଘଟିଗଲା। ଆଖିରେ ୨ଦିନ ଠୋପାଏ ଲୁହ ନଥିଲା। ମାଙ୍କୁ ଦେଖିବାର ଥିଲା ପିଲାଙ୍କ ଆଗରେ କେବେ କାନ୍ଦି ପାରେନା। ନିରୋଳାରେ ଏକାନ୍ତରେ ବସି କାନ୍ଦିକାନ୍ଦି ସବୁ କୋହ ବାହାରିଗଲା। ସେ ଦିନ ବୁଝିପାରିଲି ମାଙ୍କର କଥା "ଭଗବାନ ତତେ କିଛି ଉଦ୍ଦେଶ୍ୟରେ ମୋ ପାଖକୁ ପଠାଇଛନ୍ତି"। ସେ ଦିନ ଜୀବନର ମହତ୍ୱ ବୁଝିପାରିଲି। ପଦ ପ୍ରତିଷ୍ଠା, ଧନ, ମାନ, ଜନ ସବୁ କ୍ଷଣସ୍ଥାୟୀ। କାହାକୁ ନେଇ ଏ ଗର୍ବ, ଏ ଅଭିମାନ, ଏ ରାଗ? ସବୁ ଜିନିଷ କ୍ଷଣସ୍ଥାୟୀ। କ୍ଷଣିକ ଏ ଜୀବନ। ଯେତିକି ଦିନ ରହିବା, ଖୁସି ରହିବା ଓ ଖୁସି ବାଣ୍ଟିବା। ଜନ୍ମ ସତ୍ୟ ମୃତ୍ୟୁ ମଧ୍ୟ ସତ୍ୟ ବାକି ଚାରିଦିନ ଭଗବାନଙ୍କର ଖେଳ। ପ୍ରଭୁ ଜଗନ୍ନାଥଙ୍କଠୁ ସୃଷ୍ଟି ଓ ସେଇଠି ଅନ୍ତ।

ଆମ ପାଇଁ ପିତା ହେଉଛି ଏକ ସାରାଂସ । ଆମ ପିତାଙ୍କୁ କେବଳ ପିତୃଦିବସରେ ଆମେ ସୀମିତ ରଖିପାରିବୁ ନାହିଁ। ଏହା ପାଶ୍ଚାତ୍ୟ ଦେଶ ପାଇଁ ଲାଗୁ ଯେଉଁଠି ଗୋଟେ ପିଲା ତା ବାପାଙ୍କୁ ଚିହ୍ନିବି ନ ଥାଏ। ଏହା ଆମ ପାଇଁ ପ୍ରଯୁଜ୍ୟ ନୁହେଁ।

ଆମ ପିତା ଆମ ପାଇଁ ସର୍ବଦା ସମ୍ମାନନୀୟ। ଚିରଦିନ ସେ ଆମ ହୃଦୟରେ ରହୁଥିବା ଏକ ପ୍ରତିମା। ଏହି ହାତ, ଗୋଡ଼, ଆଖି ସବୁ ତାଙ୍କରି ଅବଦାନ। ସେ ଦୁନିଆରେ ନ ଥିଲେ ମଧ୍ୟ ସେ ଆମ ଭିତରେ ଜୀବିତ। ଆମେ ଆଖିପତା ବନ୍ଦ କଲା ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ଆମ ପିତା ମାତା ଆମ ଭିତରେ ପ୍ରଜ୍ଞା ରୂପେ ବିରାଜମାନ।

ତାଙ୍କ ସମ୍ମାନରକ୍ଷା କରିବା ଆମର କର୍ତ୍ତବ୍ୟ ଓ ଦାୟିତ୍ୱ। ଆଜିର ଯୁବପିଢ଼ି ଏହାକୁ ଉପଲବ୍ଧି କରିବା ଉଚିତ। ତାହା ହିଁ ପିତୃ ଦିବସର ଉଦ୍ଦେଶ୍ୟ ହେଉ।

କରବୀ କାଦମ୍ବିନୀ କର
ଭୁବନେଶ୍ୱର

ବାପା

ବାପା ଆସିବେ ପୂରା ବର୍ଷେ ଆଠ ମାସ ପରେ। ସେ, ଯେ ଅସୁସ୍ଥ ବୋଉକୁ ନେଇ ଆସିଥିଲେ ମୋ ପାଖକୁ ଆଉ ଫେରିଥିଲେ ବୋଉର ନିଷ୍ପ୍ରାଣ ଦେହକୁ ନେଇ। ତାପରେ ଆଉ କେବେ ଆସି ନାହାନ୍ତି ମୋ ବସାକୁ। ବୋଉ ଥିଲା, ଦୁଇଜଣ ଯାକ ଗାଁରେ ଥିଲେ, ଠିକ୍ ଥିଲା। ହେଲେ ଏବେ ଏକୁଟିଆ ବାପାଙ୍କର ଗାଁ ରେ ରହିବାକୁ ନା ସେ ଭଲ ପାଉଥିଲେ ନା ମୁଁ। ଆମେ ଦିହେଁ ଆମ ପାଖରେ ଆସି ରହିବାକୁ ଅନେକ ଥର ବୁଝେଇ ପ୍ରତିଥର ବାପାଙ୍କ ଜିଦି ପାଖରେ ହାରିଥିଲୁ। ସବୁଥର ସେ କିଛି ନା କିଛି କହି ଆମକୁ ଭଣ୍ଡେଇ ଦଉଥିଲେ। କେବେ ଚା କପେ କରି ପିଇ ନଥିବା ଲୋକଟି ନିଜେ ରୋଷେଇ କରି ଖାଇ ଗାଁରେ ଏକୁଟିଆ ରହୁଥିଲେ। ବାପା କାହିଁକି ଏଇଠି ଏମିତି ନିଃସଙ୍ଗତା ଭିତରେ ରହୁଛ ବୋଲି ପଚାରିଲେ ବାପା ଟିକେ ହସିଦେଇ କୁହନ୍ତି--ନିଃସଙ୍ଗତା କୋଉଠି। ତୋ ବୋଉ ପରା ମୋ ପାଖରେ ସବୁବେଳେ ଅଛି। କେତେ ଯତ୍ନରେ ସେ ଏଘର ସଜାଡି ଥିଲା। ତା ଆତ୍ମା ଏଇଠି ଥିବ। ମୁଁ ଚାଲିଗଲେ ବରଂ ସେ ଏକୁଟିଆ ହେଇଯିବ। ସବୁବେଳେ ମତେ ଜଗି କୁଆଡେ ଯାଉ ନଥିବା ଲୋକଟାକୁ ମୁଁ କେମିତି ଛାଡିଦେଇ ତୋ ପାଖକୁ ଯାଇପାରିବି କହିଲୁ।

ସେ ସେଇଠି କଥା ଛିଣ୍ଡେଇ ଦିଅନ୍ତି। ମୁଁ ଚୁପ ହେଇଯାଏ। ବାପା ଖୁବ ମିତଭାଷୀ। ତାଙ୍କୁ ଆଉ ଜୋର କରିପାରେନି। ହେଲେ ତାଙ୍କ ପାଇଁ କିଛି ନ କରିପାରୁଥିବାର ଦୁଃଖ ମତେ ଅନେକ ସମୟରେ

ଘାଣ୍ଟେ। ହେଲେ କାଲି ସନ୍ଧ୍ୟାରେ ଯେତେବେଳେ ସେ ଫୋନକରି କହିଲେ ଯେ ଜଣେ ଅସୁସ୍ଥ ସାଙ୍ଗଙ୍କୁ ଦେଖିବାକୁ ଆସୁଛନ୍ତି ଓ ଗୋଟେ ଦିନ ରହି ତା ପରଦିନ ଫେରିବେ ତ ମୋ ମନ କୁଣ୍ଢେ ମୋଟ ହେଇଗଲା। ସୋନି ତାଙ୍କ ବୋଉଙ୍କ ଅପରେସନ ପାଇଁ ଦିଲ୍ଲୀ ଯାଇଛନ୍ତି। ପଚାରିବି କି ବାପା କଣ ଖାଇବାକୁ ଭଲ ପାଆନ୍ତି। ଧେତ ତାଙ୍କୁ କାଇଁ ପଚାରିବି। ସେ କଣ ମୋଠାରୁ ବାପାଙ୍କୁ ବେଶି ଚିହ୍ନି ଛନ୍ତି। ତାଙ୍କ ଠାରୁ ଅଧିକ ସମୟ ମୁଁ ବାପାଙ୍କ ପାଖରେ ବିତେଇଛି। ଯାହା ହେଲେ ମୁଁ ପୁଅ ନା। ବାପାଙ୍କ ପୁଅ ବୋଲି ମନରେ ଏକ ମଧୁର ଅହଂ ସହ ଆନନ୍ଦ ଆସୁଥିଲା। ହୁଏତ ସବୁ ସନ୍ତାନମାନଙ୍କୁ ଏମିତି ଲାଗୁଥିବ। ତାଛଡା ସୋନିଙ୍କୁ ବାପାଙ୍କ ଆସିବା କଥା ନଜଣେଇବାର ଆଉ ଗୋଟିଏ କାରଣ ହେଲା, ସେ ନ ଥିବା ବେଳେ ବାପା ଆସୁଛନ୍ତି ଜାଣି ନିଶ୍ଚୟ ବ୍ୟସ୍ତ ହେବେ। କୋଉ ଅଳ୍ପ ବାଟ ହେଇଛି ଯେ ଗାଟେ ଡିଆଁକେ ଆସି ପହଂଚିଯିବେ। ଏଣୁ ତାଙ୍କୁ କିଛି ନ ଜଣେଇ ବାପାଙ୍କ ପାଇଁ ପ୍ରସ୍ତୁତି ଆରମ୍ଭ କରିଦେଲି। ବାପା ଯୋଉ ରୁମଟିରେ ଶୋଇବେ ସେ ଘରଟିକୁ ମନୁଆକୁ କହି ଆଉଥରେ ସଫା କରେଇ ହାଲ୍କା ରଙ୍ଗର ବେଡ଼ସିଟ ଟିଏ ବିଛେଇ ଦେଲି। ବାପାଙ୍କୁ ଗାଢ଼ ରଙ୍ଗ ପସନ୍ଦ ନୁହେଁ। ଏବେ ରହିଲା ଖାଇବା କଥା। ବାପା ଚିକେନ୍ କି ମଟନ ଖାଆନ୍ତି ନାହିଁ। ଅଣ୍ଡା ଖାଇଲେ ଆଲର୍ଜି ହୁଏ। ଚିଙ୍ଗୁଡି ଓ ବଡ଼ ମାଛ ତାଙ୍କର ପ୍ରିୟ। ସବୁଦିନେ ଆମିଷ ଟିକେ ନହେଲେ ଖାଇବା ପାଖରେ ବସନ୍ତି ନାହିଁ। ଏଣୁ ନିଜେ ବଜାର ଯାଇ ବାପାଙ୍କ ପାଇଁ ଜୀଅନ୍ତା ଚିଙ୍ଗୁଡ଼ି ଓ ବଡ଼ ରୋହୀ ମାଛ ଆଣିଲି। ଘରେ ଆମର ଶହେ ସରିକି ନଡିଆ ଗଛ। ଏଣୁ ପ୍ରାୟ ତରକାରୀରେ ନଡିଆ ପକାଏ ବୋଉ। ବୋଉ ହାତ ନଡ଼ିଆ ରସ ଦିଆ ଚିଙ୍ଗୁଡି ତରକାରୀ ଖୁବ ସୁଆଦିଆ। ଏଇ ତରକାରୀ ହେବା ଦିନ ବାପା ଆଉ ମୁଠେ ଅଧିକ ଭାତ ଖାଆନ୍ତି। ମନେ ପଡ଼ିଗଲାରୁ ମନୁଆକୁ ନଡ଼ିଆ ରସ ଦେଇ ଚିଙ୍ଗୁଡି ତରକାରୀ ସହ ରୋହୀ ମାଛ ଭାଜିବାକୁ ଅର୍ଡର ଦେଇ ବାପାଙ୍କୁ ଆଣିବା ପାଇଁ ବସ ଷ୍ଟାଣ୍ଡ ଗଲି।

ବାପା ଆସିଲେ। ଧୁଆ ଧୋଇ ହେଇ ଗପସପ ହେଉ ହେଉ ମନୁଆ ଭାତ ବାଢି ଖାଇବାକୁ ଡାକିଲା। ମୋ ମନରେ ପ୍ରବଳ ଆଗ୍ରହ। ବାପାଙ୍କୁ ଆତ୍ମସନ୍ତୋଷରେ ହାତ ଚାଟି ଚିଙ୍ଗୁଡ଼ି ଖାଇବାର ଦୃଶ୍ୟ ଦେଖିବି। ଖାଇବା ଟେବୁଲରେ ବସି ବାପାଙ୍କୁ ଅପେକ୍ଷା କରିଥିଲି। ଏଇ ସମୟରେ ବାପା ରୋଷେଇ ଘରେ ପଶି ଗୋଟିଏ ଥାଳିଆରେ ଗରମ ଗରମ ଚୁନା ମାଛ ଭଜା ଆଣି ମୋ ଥାଳି କଡରେ ଅଜାଡି ଦେଲେ। ମୁଁ ତ ଚୁନା ମାଛ ଆଣି ନ ଥିଲି। ବାପା ତ ଚୁନା ମାଛ ଭଲ ପାଆନ୍ତି ନାହିଁ। ତେବେ କିଏ.....ମୋ ଭାବନା ନ ସରୁଣୁ ବାପା ଚିଙ୍ଗୁଡ଼ି ତରକାରୀ ଓ ମାଛ ଭଜା ପ୍ଲେଟ ଦୁଇଟିକୁ ଆଡେଇ ଦେଇ ଦହି, ସାଲାଡ଼ ଓ କଦଳୀ ଭଜା ଲଗେଇ ଭାତ ଖାଉ ଖାଉ କହିଲେ---ଆଜି ଭୋରରୁ ଉଠି ଚୁଆରେ ଜାଲ ଖେପାଏ ପକେଇଥିଲି। ଟିକେ ଚୁନା ମାଛ ମିଳିଗଲା। ତୁ ପରା ଚୁନା ମାଛ ଭଲ ପାଉ। ବୋଉ ପରି କଣ ମୁଁ ଭାଜି ପାରିବି। ଦେଖିଲୁ ଭଲ ଲାଗୁଛି କି ନାହିଁ। ମନୁଆକୁ ଗରମ କରି ଦେବାକୁ କହିଥିଲି। ଖାଇବା ଥଣ୍ଡା ହେଲେ ତୁ ଘର ଉଠଉ ଥିଲୁ ପକାଉଥିଲୁ ପରା।

ବାପାଙ୍କ ଓଠରେ ସ୍ନିଗ୍ଧ ହସ ଟିକେ ଖେଳିଗଲା। ମୁଁ ଖୁସିରେ ଫୁଲାଏ କୁଡୁକୁଡ଼ିଆ ଚୁନା ମାଛ ଭଜା ପାଟିରେ ପୁରଉ ପୁରଉ ପଚାରିଲି ହେଲେ ବାପା ଆପଣ ଚିଙ୍ଗୁଡ଼ି ତରକାରୀ ଆଉ ମାଛ ଭଜା କାଇଁ ଆଡେଇ ଦେଲେ ? ମୁଁ ପରା ଖାସେ ତୁମପାଇଁ ମନୁଆକୁ ଏସବୁ ରାନ୍ଧିବାକୁ କହିଥିଲି। 'ନିଅନ୍ତୁ' କହି ତାଙ୍କ ଭାତ ଥାଳି ପାଖରେ ଚିଙ୍ଗୁଡ଼ି ତରକାରୀ ଥୋଇଲା ବେଳକୁ ମ୍ଲାନ ହସି ବାପା କହିଲେ- ଥାଉ ବାପା, ତୋ ବୋଉ ଗଲା ଦିନଠୁ ଏସବୁ ଛାଡି ଦେଇଛି। ପ୍ରିୟ ମଣିଷଟି ଗଲା ପରେ ପ୍ରିୟ ଖାଦ୍ୟ ଆଉ କିଛି ରହେନା।

ମୁଁ ଧଡ଼ କରି ଚମକି ପଡିଲି। ସତେ ତ। ଏତେ ବଡ଼ କଥା ମୁଁ କେମିତି ଭୁଲି ଯାଇଥିଲି। ନିଜକୁ ଧିକ୍କାର କରୁଥିଲି। ବାପା କେବେ ବି ପ୍ରତ୍ୟେକ୍ଷ ଭାବେ ମୋ ଖାଇବା ସହ ଜଡିତ ନ ଥିଲେ। ତଥାପି ମୋ ପ୍ରିୟ କୁଡୁକୁଡ଼ିଆ ଚୁନା ମାଛକଥା ମନେ ରଖିଛନ୍ତି। ହେଲେ ମୁଁ ତାଙ୍କର ଏବେକାର କଥା, ମାନେ ବୋଉ ଗଲାପରେ ଆମିଷ ଛାଡିବା କଥାଟିକୁ କେମିତି ମନେ ରଖି ପାରିଲିନି। ବାପାଙ୍କ ପାଇଁ କିଛି କରିପାରିବାର ଯେଉଁ ଛୋଟିଆ ଅହଂଟି ମୋତେ କବଳିତ କରୁଥିଲା ତାହା କ୍ଷଣିକରେ ଉଭେଇଗଲା। ବାପା ସବୁବେଳେ ବାପା। ପୁଅଟିଏ କଣ କୋଉଥିରେ ବି ତାଙ୍କର ସମକକ୍ଷ ହେଇ ପାରିବ। ବାପାଙ୍କୁ ଅନେଇଲି। ତଳକୁ ମୁହଁ ପୋତି ସାଲାଡ଼ ଡାଲି ଓ ଦହି ଲଗେଇ ସହଜ ଭାବେ ଖାଉଥିଲେ। ଚିଙ୍ଗୁଡ଼ି ଓ ମାଛ ସେମିତି ଥୁଆ ହେଇଥିଲା। ଦୃଷ୍ଟି ଫେରେଇଲି ମୋ ଥାଳି ପାଖରେ ଥୁଆ ହେଇଥିବା ବାପାଙ୍କ ଅନଭ୍ୟସ୍ତ ହାତର ଟିକେ ଟିକେ ପୋଡି ଯାଇଥିବା ଚୁନାମାଛ ଭଜା ଉପରକୁ। ବାପା ଭାଜିଥିବା ଏହି ଚୁନା ମାଛ ଭଜା ପାଖରେ ମୋ ଚିଙ୍ଗୁଡ଼ି ଓ ବଡ ମାଛ ଭଜା କେତେ ନିକୃଷ୍ଟ ସତେ। ବାପା ଧୀରେ ଧୀରେ ହିମାଳୟ ପରି ବିଶାଳ ଲାଗୁଥିଲେ ମାତେ ଆଉ ମୁଁ ଭାଙ୍ଗି ଯାଇ ବାଲି ରେଣୁ ପାଲଟି ଯାଉଥିଲି।

ମମତା ଆଚାର୍ଯ୍ୟ
ଦାମନଯୋଡ଼ି

ପଞ୍ଚସ୍ତରୀ ବର୍ଷ ସ୍ୱାଧୀନତା ଦିବସ ଉପଲକ୍ଷେ

ଆସ ଆଉଥରେ ସ୍ୱାଧୀନ ହେବା

ଅମୃତ ମହୋତ୍ସବର ସ୍ୱାଦ ଚାଖିବା
ଆସ ଆଉଥରେ ସ୍ୱାଧୀନ ହେବା
ମିଛ ରାଜନୀତିର ଆଧାର ଛାଡ଼ି
ସତ ସତିକା ସ୍ୱାଧୀନ ହେବା

କାଶ୍ମୀରଠାରୁ କନ୍ୟାକୁମାରୀ ଦେଶ ଆମର
ଭାରତ ଦେଶର ପରିଚୟ ସମ୍ମାନ ଆମର
ପର ହାତକୁ ଟେକି ନ ଦେବା
ଆସ ପୁଣି ଥରେ ସ୍ୱାଧୀନ ହେବା

ସଂଗ୍ରାମି ମେଳି ହାତରେ ଲାଠି
ଗୋରା ସରକାରକୁ ଦେଲେ ସେ ବାଜି
ଦେଶରେ ଏକତା ବଜାୟ ରଖିବା
ଆସ ଆଉଥରେ ସ୍ୱାଧୀନ ହେବା

ବ୍ରିଟିଶ ସରକାରର କ୍ରୁର ଶାସନ
ଦେଶବାସୀଙ୍କୁ କଲେ କ୍ରୀତଦାସ ସମାନ
ଇତିହାସର ପ୍ରତିଟି ପୃଷ୍ଠାକୁ ମନେ ପକାଇ
ଆସ ଆଉଥରେ ସ୍ୱାଧୀନ ହେବା

ବାଜିରାଓ ଭଳି ଛୋଟ ପିଲାଟି
ରଖିଲା ଟେକ ଦେଇ ବଳିଦାନ
ଆସ ସମସ୍ତେ ମିଳିମିଶି ଏକାଠି ହୋଇ
ରଖିବା ଆମେ ଯେ ଦେଶର ମାନ

ଆସ ଭାତୃଭାବର ପରିଚୟ ଦେବା
ଆସ ଆଉଥରେ ସ୍ୱାଧୀନ ହେବା

ଭାରତମାତାର ସନ୍ତାନ ଆମେ
ଏହି ପରିଚୟ ହେବ ଆମରି
ଆତଙ୍କବାଦର କ୍ରୁରତାକୁ ଦମନ କରି
ଦେଶକୁ ଆତଙ୍କବାଦରୁ ମୁକ୍ତ କରି
ଦ୍ୱେଷ ମନୋଭାବକୁ ନିବୃତ କରି
ଏକାଠି ହୋଇ ଲଢ଼ିବା
ଆସ ଆଉଥରେ ସ୍ୱାଧୀନ ହେବା

ଏଇ ସ୍ୱାଧୀନତା ପାଇଁ କେତେ ବୀରାଙ୍ଗନା
ମାତୃଶକ୍ତିର ଦେଲେ ପରିଚୟ
ଲଢ଼ି ଦେଶପାଇଁ ଦେଲେ ବଳିଦାନ
ଅମୃତ ମହୋତ୍ସବର ଅବସରରେ
ହାତରେ ହାତ ମିଶାଇ
ମନକୁ ମନ ମିଶାଇ ଦେବା
ଜୟ ଜୟକାରର ହୁଁକାର ଭରିବା
ଆସ ଆଉଥରେ ସ୍ୱାଧୀନ ହେବା
ଆସ ଆଉଥରେ ସ୍ୱାଧୀନ ହେବା

ଶିଖା ନାୟକ
ଭୁବନେଶ୍ୱର

Ratha Yatra: The Grand Sojourn

"Ma, we have a long weekend from 1st July to 3rd July, because of Ratha Yatra," Seema, told her mother Nalini on reaching home from office. Nita and Nikhil, her children who were watching the television, rushed to hug Seema.

Nita: "Granny now you have to tell us what is the Ratha Yatra!"!

Both Seema and Nikhil also joined Nita with the requst.

Nalini: "Ok, ok!! Being an Odia, you must know about Ratha Yatra or the Car Festival as it has been known all along!!
Ratha Yatra literally means, the Chariot Procession."

Nikhil: "That is ok, but why is Ratha Yatra celebrated?

Nalini: When we speak of Ratha Yatra in Odisha, we refer to the annual 9 day trip taken by the Divine siblings, Lord Jagannath (Vishnu incarnation), Lord Balabhadra (the eldest sibling), Goddess Subhadra (their sister and the youngest sibling) and Sudarshan (the divine weapon of Lord Vishnu), to their Aunt's place, the Gundicha Temple, around 3 km from the Jagannath Temple on the Grand Road."

Nita: "And why do they go there?

Nikhil: "Yes Granny, what is the purpose behind the trip"?

Nalini: "Rightly asked dears! Deities visit aunt's place once in a year. There is another purpose also, that the Non-Hindus are not allowed into the Jagannath temple, since time immemorial. But Lord Jagannath, is a very much loved God and equally affectionate. So, to enable darshan for those devotees who can't enter the temple, he embarks on this journey!!

Seema:"You know what children? Whenever I think of Ratha Yatra, immediately the 3 colorful chariots with their respective deities,moving amidst the sea of people, on the Grand Road (Bada Danda) in Puri, comes to my mind!!"

Nalini:"Yes, that is true! In fact every thing about Lord Jagannath is Grand! He is known as the Grand Lord (Bada Thakura) of the Grand Temple (Bada Deula) and has Grand Prasad (Mahaprasad) !!"

Nikhil:"Haha!! That is so cool Granny!! Also he has huge eyes, Grand eyes (Chaka Nayana) they are!!"

Nita: "When is Ratha Yatra celebrated Granny?"

Nalini: "Ratha Yatra starts from the Hindu month of Ashadha Shukla dwitiya and continues for 9 days. During the journey the chariots are pulled by the devotees from Jagannath temple to the Gundicha temple."

Seema: "Also the festivities include carrying the deities out of the sacrosantum of the temple to the chariots in a rhythmic motion known as the "Pahandi Bije".

Nalini: "Yes, you will be surprised to know that the Grand Lord is literally lifted with hands by the servitors and seated on the Rathas"!

Nikhil: "What are the Rathas made of Granny?

Nalini: "The Rathas are huge wheeled wooden structures draped in colorful applique fabrics, built anew every year and pulled by the devotees. Also each Ratha has an interesting name!

Nita: "Really Granny"?? What are the names?

Nalini: "I think, your Mom can answer that!!

Seema: "Yes Ma, I do remember the names, Lord Jagannath's Ratha is called "Nandighosha", Lord Balabhadra's Ratha is called "Taladhwaja" and Devi Subhadra's "Darpadalana".

Nikhil: Wow! Mom, you remember so much!!

Shaswatee Mohanty
Bhubaneswar

Pride Of Odisha

Draupadi Murmu :

The 15th President of India.

Draupadi Murmu is the first tribal and second woman to become the President of India.She is an active tribal politician hailing from a remote location of Odisha. On 20 June 1958, she was born in the Baidaposi village of Mayurbhanj (Odisha). Her father Biranchi Narayan Tudu was the village headman. Being born in the Santhal community of a tribal family, Draupadi Murmu faced many hardships and struggles.

She was an assistant teacher before entering politics in 1997. She also served as BJP's Vice-president of Scheduled Tribes Morcha. Serving twice as MLA of Rairangpur, she was elected as the 9th Governor of Jharkhand from 2015 to 2021. Draupadi Murmu is also renowned for being the best MLA by the prestigious Nilkantha Award by the Odisha Legislative Assembly. Despite several personal tragedies like the death of her husband and then two grown-up sons, she was always dedicated to serving society.

She is pride of Odisha and we pray that she may empower our glorious nation to greater heights.

EID-AL-ADHA

Eid-Al-Adha is celebrated by Islamic communities across the world. As per Islamic Lunar Calendar, the 10th day of Dhu Al-Hijjah is celebrated as Eid-Al-Adha. It is the second important festival celebrated by Muslims, after Eid-Al-Fitr. This festival basically marks the end of Hajj or Pilgrimage to Makkah, which is one of the religious duties and one of the five pillars of Islam. This Eid is also known as the Eid of sacrifice, and it basically commemorates the faith of prophet Ibrahim (may peace be upon him) and devotion to Allah. It honours the willingness of Ibrahim to sacrifice his son Ismail as an act of obedience to God's command. He keeps dreaming that he is slaughtering his own son as the command from God. But his son Prophet Ismail was replaced by a lamb. This sacrifice made by Ibrahim is celebrated as Eid- Al-Adha. Muslims all over the world therefore sacrifice animal this day and feed the poor and needy as an act of devotion to Allah.

On this day, people offer Eid-Al-Adha prayers at the mosque. Prayers are offered in congregation. The holy prayers are performed before noon time and after the sunrise. People wish each other, visit each other's place, exchange sweets and gifts. People also invite their friends, relatives and neighbours for Eid-Al-Adha fest. People distribute new clothes, food and sweets to poor and needy. With this act Muslim reflect on the many significant messages of the story and beyond including their duty to Allah and those who are praying for the sanctity of Allah's creation and world around us.

Shaheen Sultana
Bhubaneswar

> The ultimate measure of a man is not where he stands in moments of convenience and comfort, but where he stands at times of challenge and controversy.
>
> Martin Luther King, JR

Kargil Vijay Diwas

Kargil Vijay Diwas (कारगिल विजय दिवस) is celebrated each 26 July in India, as a mark of India's triumph over Pakistan in the Kargil War for removing Pakistani Forces from their involved situations on the mountain ridges of Northern Kargil District of Ladakh in 1999. This day is additionally celebrated as 'Amrut Mahotsav'.

This day is celebrated all over India. On this day our Prime Minister honours the Jawans at Amar Jawan Jyoti, India Gate. Various programms are organised all around the country to recognize the commitments and victory of the Indian Armed Forces.

After the Indo-Pak battle of 1971, there had been numerous controversies. Both the nations did atomic tests in 1998 which had additionally heightened the matter. To quiet the circumstance, in February 1999, the two nations signed The Lahore Declaration, promising to give a serene and reciprocal solution to the Kashmir issue.

But on third May 1999, Pakistan began this war when it occupied the high mountains of Kargil with around 5000 fighters. At the point when the Indian Government got the information about it, operation 'Vijay' was sent off by the Indian armed force to toss back the infiltrators who had captured the Indian territory.

The Indian Air Force(IAF) accompanied the ground troops by utlizing fighter planes. To go after the objectives on the ground, MiG fighter planes were used. Several targets in Pakistan were attacked. Consequently, MiG-21s and Mirage 2000 of the IAF were widely utilized in operation 'Safed Sagar' during this conflict.

An enormous number of rockets and bombs were utilized in this conflict. Around two lakh fifty thousand shells, bombs, and rockets were shot. Roughly 5,000 gunnery shells, mortar bombs, and rockets were discharged. 300 firearms, mortars and 9,000 shells that were dropped on the Tiger Hill were recovered. It is said that, this was the main conflict after World War II, where in, such an enormous number of bombardments were done on the enemy. At last, India won.

> **Either I will come back after hoisting the Tricolour, or I will come back wrapped in it but I will be back for sure.**
>
> ***Captain Vikram Batra***

It would not be wrong to say that War is never good. This causes a significant misfortune on both sides. Many are martyred, many are injured and devastations are taken place both the sides. India is a harmonious cherishing country that doesn't have faith in war. Indian armed forces always protect the country from intruders and make us feel proud .This is the reason why we Indians are thankful and are always grateful to our jawans for whom we enjoy a safe life and can sleep peacefully.A hearty salute to all our armed forces for their service to Bharat.

सत्यमेव जयते । जय हिन्द ।

Meenakshee Choudhury
Bhubaneswar

TOUCHING LIVES

भुवनेश्वर

विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर 'रेडियो चॉकलेट' एफएम के साथ वृक्षारोपण करते और उसके महत्व को दर्शाते हुए नालको महिला समिति की अध्यक्षा श्रीमती सस्मिता पात्र।

नालको महिला समिति की अध्यक्षा द्वारा रजपर्व के अवसर पर हमारी संस्कृति के अनमोल धरोहर "बुजुर्गों" के द्वारा आशीर्वाद और प्यार पाने के लिए किया गया एक अनूठा पहल।

समारोह में भाव विभोर के कुछ क्षण।

रज पर्व के अवसर पर आयोजित समारोह में बढ़-चढ़कर हिस्सा लेती हुई नालको महिला समिति की सदस्याएं।

नालको महिला समिति की अध्यक्षा, श्रीमती सस्मिता पात्र आज़ादी का अमृत महोत्सव की शुभ बेला पर हर घर तिरंगा कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए "हाथ से हाथ मिलाएंगे, हर घर में तिरंगा फहराएंगे"।

स्वतंत्रता दिवस के शुभ अवसर पर महिला सदस्याओं के साथ, नालको महिला समिति की अध्यक्षा अपने कर कमलों से दिव्यांगों को गायन प्रस्तुति पर सम्मानित करती हुईं।

समाज के जरूरतमंदों को सहयोग देने के कर्तव्य का वहन करते हुए नालको महिला समिति की अध्यक्षा और सदस्या द्वारा अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, भुवनेश्वर में खाद्य सामग्री का वितरण।

वन महोत्सव के अवसर पर नालको महिला समिति द्वारा नालको कॉलोनी (आवास) में हरियाली को बढ़ावा देने के लिए किया गया वृक्षारोपण।

अनुगुळ

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस में योग को बढ़ावा देते हुए।

हर घर तिरंगा के कार्यक्रम को आगे बढ़ाते हुए
नालको लेडीज क्लब, अनुगुळ की अध्यक्षा।

रज पर्व के अवसर पर आयोजित समारोह में शामिल होती हुई
नालको लेडीज क्लब, अनुगुळ की महिलाएं।

वन महोत्सव(7 जुलाई)के अवसर पर
नालको लेडीज क्लब, अनुगुळ की अध्यक्षा के साथ
वृक्षारोपण में भाग लेती हुई महिलाएं।

स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर बच्चों के बीच प्रश्नोत्तरी
प्रतियोगिता।

नालको लेडीज क्लब, अनुगुळ द्वारा स्वतंत्रता दिवस में आयोजित
रंगोली प्रतियोगिता।

दामनजोड़ी

रज समारोह में नालको लेडीज क्लब, दामनजोड़ी की अध्यक्षा का स्वागत करते हुए क्लब की सदस्या।

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर नालको लेडीज क्लब, दामनजोड़ी की सदस्याएं।

रथ यात्रा के पावन अवसर पर नालको लेडीज क्लब, दामनजोड़ी द्वारा मास्क और पानी के बोतल का वितरण।

वन महोत्सव दिवस के अवसर पर वृक्षारोपण करती हुई नालको लेडीज क्लब, दामनजोड़ी की अध्यक्षा और सदस्याएं ।

स्वतंत्रता दिवस के समारोह में अपनी सहभागिता देते हुए नालको लेडीज क्लब, दामनजोड़ी के सदस्य।

स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर आदर्श विद्यालय, कुंटिया में समाज सेवा करते हुए नालको, दामनजोड़ी एवं नालको लेडीज क्लब, दामनजोड़ी के प्रतिनिधि।

सावन के शुभ पर्व को हर्ष और उल्लास के साथ मनाते हुए नालको लेडीज क्लब, दामनजोड़ी की सदस्याएं।

Readers are requested to send their write ups, suggestions and feedback to nmssangini@gmail.com in clear handwriting or soft copy before 30th September 2022 - Editor-in-Chief

नालको NALCO
National Aluminium Company Limited

Born in ODISHA..
Grown in ODISHA..
Globally Represents ODISHA...

No. 1 Lowest Cost Producer of Alumina in World

No. 1 Lowest Cost Producer of Bauxite in World

2nd Highest Net Foreign Exchange Earning CPSE in the Country

NALCO
THE INDUSTRIAL KONARK OF ODISHA

Designed and printed by sanket